वर्ष 50 • अंक 11 • नवम्बर 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 50 ● अंक 11 ● नवम्बर 2023 ● पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

6. सबसे पहले
7. सम्पूर्ण अवतार बाणी
16. दादा के उत्तर
29. अनमोल वचन
38. भैया से पूछो
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

चित्रकथायें

12. चित्रकथा
34. किट्टी

विशेष/लेख

22. कहानी डायनासोर की, उसी की जुबानी
– गोपाल जी गुप्त

30. तितली मछली
– डॉ. परशुराम शुक्ल

42. गुणों से भरपूर शहद
– राजकुमार जैन

कहानियां

8. शांतिब्रह्म सन्त एकनाथ जी
– राजेन्द्र थोरात

10. युद्ध किसने जीता
– शिखा जोशी

18. हर जीव में अलग–अलग गुण
– डॉ. घमड़ीलाल अग्रवाल

26. सबसे बड़ी मूर्खता
– राधेलाल 'नवचक्र'

40. अनोखी दिवाली
– ललित शौर्य

कविताएं

9. पुस्तक
– राजेन्द्र निशेश

21. लो फिर से आ गई दिवाली, ऐसे दीपावली मनाएँ
– डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

24. आकाशगंगा
– डॉ. दिनेश चमोला

33. दीप जले
– गफूर 'स्नेही'

33. दीपक
– दिनेश दर्पण

47. सच की जीत सदा है होती
– राजेन्द्र निशेश

47. दीप तुम्हारा प्यार
– चन्द्रभान

सन्त निरंकारी मण्डल (मुख्यालय)

सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009

आशीर्वाद

बाल पत्रिका हँसती दुनिया पिछले 50 वर्षों से अपने पाठकों को हँसने के अवसर देने के साथ–साथ हँसने के कारण और हँसाने का तरीका भी समझाती आ रही है। आज के आधुनिक युग में जहाँ एक ओर प्रगति की नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की जा रही हैं, वहीं यह भी जरूरी है कि हम परमात्मा का आधार लेकर हर परिस्थिति को मुस्कुराते हुए सबको साथ लेकर आगे बढ़ते जाएँ। बच्चों और बड़ों, दोनों को ही इस पत्रिका से बहुत कुछ सीखने को मिलता रहा है। बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज और बाद में बाबा हरदेव सिंह जी महाराज और फिर माता सविंदर हरदेव जी महाराज द्वारा इस पत्रिका को निरंतर आशीर्वाद मिलता रहा।

हँसती दुनिया बच्चों की अत्यन्त लोकप्रिय पत्रिका है जो आधी सदी से हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और मराठी भाषा में प्रकाशित होकर बच्चों को शिक्षा, नैतिकता, सद्व्यवहार और अध्यात्म की सहज शिक्षा दे रही है।

दातार कृपा करे कि बच्चों की इस मासिक पत्रिका से जुड़े सभी सम्पादकगण, लेखक, कवि और अन्य सेवादार इसी प्रकार नई ऊर्जा और नवीन सोच के साथ हँसती दुनिया के पाठकों एवं बच्चों के चरित्र निर्माण, प्रेरणा और प्रगति का साधन बने रहें।

Sudiksha

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

हँसती दुनिया

सुसंस्कारों का आधार

हमारी प्रॉपर्टी के तो कई उत्तराधिकारी हो सकते हैं परन्तु हमारे कर्मों की जिम्मेवारी हमारी अपनी ही होती है। उसका फल तो हमें स्वयं ही भोगना पड़ता है। अगर हमारे कर्म उत्तम हैं तो कर्मों का फल भी उत्तम ही होगा, नहीं तो जैसा कर्म वैसा फल।

सन् 1973 के अक्टूबर–दिसम्बर माह में हँसती दुनिया पत्रिका ने इस दुनिया पर पहला कदम रखा। उस समय से ही जो पाठक बालपन एवं युवावस्था से जुड़े थे। वे आज उम्र के हिसाब से प्रौढ़ एवं उससे भी ऊपर की अवस्था में प्रवेश कर चुके हैं और उनके विचारों एवं कर्मों में आमूल परिवर्तन भी आ चुका है क्योंकि हँसती दुनिया एक पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक और विश्व–भाईचारा, आध्यात्मिक मूल्यों एवं आदर्शों को सदा ही संजोएं रखती है। इस पत्रिका में इस समय हर वर्ग एवं उम्र के व्यक्ति अपने लिए कुछ न कुछ सीख अवश्य ले सकते हैं।

इस पत्रिका के अनेक लेख, स्तम्भ, प्रेरक–प्रसंग, शिक्षाप्रद एवं आध्यात्मिक कहानियाँ, कविताएँ, चित्रकथाएँ, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, हास्य–प्रसंग आदि हमारी बुद्धि का विकास तो करते ही हैं, साथ–साथ हमारी आदतों एवं संस्कारों में भी सकारात्मक परिवर्तन करते हैं। इनसे हम समाज में, परिवार में, व्यापार में एवं जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति को प्राप्त करने में सहायक भी सिद्ध होते हैं। यह परिवर्तन हमारे कर्मों में भी दिख जाता है एवं हमारे व्यवहार में भी हँसना–हँसाना, हमेशा खुश रहना एवं दूसरों को भी खुश रखना, सबकी यथा योग्य सहायता करना, बड़ों का सम्मान करना, अपने से छोटों को मधुरता से सम्बोधन करना, माता–पिता, गुरुजनों का आदर करना, आलोचना से दूर रहना, अहंकार को जागरूकता से दूर करना, जीवन को सहज एवं सरल जीना, मानवता का यह धर्म अपनाना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। एक अच्छा मानव ही मानवता का उदाहरण बन सकता है। एक आदर्श नागरिक एवं सच्चा व्यक्ति बन सकता है।

इस बार इस माह की पत्रिका में पिछले वर्षों में छपी कुछ रचनाओं में से कुछ चुनी हुई रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है ताकि नये पाठकों को पहले छपी रचनाओं के माध्यम से वह जानकारी भी मिल पाए जिसके कारण आज हँसती दुनिया अनेक भाषाओं में भी प्रकाशित हो रही है।

इस पचासवीं (गोल्डन जुबली) के अवसर पर हम उन सभी के सहयोग के लिए आभारी हैं जिन्होंने इस पत्रिका को 50 वर्ष तक पहुँचाने का एक कीर्तिमान बनाया है जिसके द्वारा अनगिनत लोगों के संस्कारों में परिवर्तन आया है। योग्य व्यक्ति सुयोग्य एवं सुसंस्कृत हो गए और बच्चों में, विद्यार्थियों में, समाज में यानि हर वर्ग के लोगों को जीवन जीने की कला का उपयोग करना भी आ गया।

परमपिता–परमात्मा से आप सभी के लिए मंगलकामना करते हैं। इसी तरह आप भी आगे बढ़ते रहें और हँसती दुनिया परिवार भी।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 283

सत्गुर तों मत्त लै के एह मन हंकार ते काबू पांदा ए।
काम क्रोध लोभ ते मोह दे संगल तोड़ी जांदा ए।
सत्गुर दी मत्त लै के मनुआ धीरज नूं अपनांदा ए।
सत्गुर दी मत्त लै के मनुआ भाणे विच आ जांदा ए।
सत्गुर दी मत्त लै के मनुआ बैरागी हो जांदा ए।
सत्गुर दी मत्त लै के एह मन तपी त्यागी हो जांदा ए।
सत्गुर दी मत्त लै के एह मन सिमरन दे विच खो जांदा ए।
उठदे बहन्दे चलदे फिरदे हर दम नाम ध्यांदा ए।
पूरा सत्गुर जिस नूं मिलया ओह किस्मत दा पूरा ए।
कहे अवतार गुरु दे बाझों हर कम रहन्दा ऊरा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि मानव अभिमान के कारण अपने आपको बड़ा और सबसे श्रेष्ठ समझने लगता है। वहीं अगर सत्गुरु की मति लेकर अगर कार्य करें तो मन, अहंकार पर काबू पाने में सफल हो जाता है। इन्सान को काम, क्रोध, लोभ और मोह की जंजीर ने जकड़ रखा है। सत्गुरु की मत लेकर ही इन मजबूत जंजीरों को तोड़कर इनसे मुक्त हुआ जा सकता है। अपने मन की मत पर चलने वाला इन्सान जगह–जगह पर असफल होता है। वह छोटी–छोटी बात पर अपना धीरज–संयम खो बैठता है। वह परमात्मा की रजा में रहने से इन्कार करता है।

सत्गुरु की मत लेने के अनेक लाभ हैं। इससे मन भाणे में रहना सीख जाता है और वैराग्य भाव अपना लेता है। मन अगर माया का अनुरागी बन गया तो जीवन जीना कठिन हो जाता है। फिर वह भौतिक पदार्थों के पीछे भागते हुए जीवन व्यतीत करता है। दूसरी ओर मन के बैरागी हो जाने पर तरह–तरह की कामनाएँ, लालसाएँ ज्यादा परेशान नहीं करतीं। फिर मन तपी–त्यागी बनकर हरि इच्छा में रहना सीख जाता है। जीवन में अगर कुछ कमी रह जाती है या इच्छानुसार सब कुछ नहीं मिलता तो भी सब्र–शुकर में रहता है। सत्गुरु की मत लेकर मन सुमिरन में खो जाता है। सबमें प्रभु का रूप देखकर, हरि–सुमिरण का आनंद लेता है। फिर वह उठते–बैठते, खाते–पीते, संसार में विचरण करते हुए हरदम नाम की मस्ती में रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिसको पूरा सत्गुरु मिल गया, समझो उसकी किस्मत बहुत अच्छी है। वह बुलन्द किस्मत वाला है। अगर मानव के जीवन में सत्गुरु नहीं है तो उसका हर काम अधूरा रहता है। जीवन का सबसे बड़ा काम, सबसे बड़ा उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति है। बिना सत्गुरु के प्रभु की प्राप्ति का यह महान कार्य भी अधूरा ही रह जाता है। अतः हे मानव तू सत्गुरु की मत ले ले और अपने जीवन को सफल कर ले।

भावार्थ : हरजीत निषाद

शांतिब्रह्म सन्त एकनाथ जी

– राजेन्द्र थोरात, सम्पादक हँसती दुनिया (मराठी)

महाराष्ट्रा के पैठण नगरी में निवास करने वाले सन्त एकनाथ जी को शांतिब्रह्म कहा जाता था। उनकी जितनी लोकप्रियता बढ़ती जाती थी उतने ही उनके विरोधी उन्हें परेशान करके उनकी शांति भंग करने की कोशिश करते थे।

सन्त जी सुबह नियमित रूप से गोदावरी नदी पर स्नान करने के लिये जाते थे। एक दिन वह स्नान करके लौट रहे थे। तभी किसी ने छज्जे से पान खाकर उनके शरीर पर थूक दिया। सन्त जी ने बिना कुछ बोले फिर से स्नान किया। ऐसा कई बार हुआ और सन्त जी स्नान करते रहे। अन्त में उस महानुभाव को खुद पर शर्म महसूस हुई। वह तेजी से नीचे आया और सन्त जी के चरणों में गिड़गिड़ाते हुए माफी माँगने लगा। सन्त जी ने उसे प्यार से गले लगाते हुए कहा, "आप इतना क्यों रो रहे हो? अपने आपको दोष मत दो। उलटा मुझे आपको धन्यवाद देना चाहिए। आपकी वजह से मुझे एक सौ एक बार गंगा स्नान का पुण्य मिला। सन्त जी ने सहनशीलता का प्रमाण देते हुए उसके अंदर की बुराईयों को खत्म कर दिया।

ऐसा ही एक और प्रसंग है। एक जरूरतमंद सज्जन को अपनी बेटी की शादी के लिये सौ रुपये की जरुरत थी। उसने कई जगह जाकर माँग की लेकिन सभी ने उसे रुपये देने से इन्कार कर दिया। कुछ बदमाशो ने उसे कहा कि हम तुम्हें सौ रुपये देंगे लेकिन एक शर्त पर... तुम उस सन्त के घर जाओ और कुछ ऐसा करो जिस से वो नाराज हो जाये। वह बेचारा तुरंत तैयार हो गया।

वह जूते पहनकर सीधे सन्त जी के घर में पूजा स्थान पर पहुँच गया। सन्त जी शास्त्र पठन कर रहे थे। वह जाकर उनकी गोद मे बैठ गया। यह देखकर सन्त जी ने अपनी पत्नी को बुलाया और कहा, "देखो, मुझसे मिलने कौन आया है, ये मुझे मिलने के लिये इतने उत्सुक हैं कि अपने जूते उतारना भी भूल गये" उनकी पत्नी गिरिजाबाई मुस्कुराते हुए आई। उसने उसका अभिनंदन किया और अपने हाथों से उसके जूते उतारकर बाहर रख दिये।

उस सज्जन ने देखा कि यह नुस्खा भी कुछ काम नही आया। गिरिजाबाई ने उसे हाथ–पैर धोने के लिए पानी दिया। सन्त जी ने उसे भोजन करने का आग्रह किया। वह सन्त जी के साथ भोजन के लिये बैठ गया। गिरजाबाई नीचे झुककर दाल–चावल पर घी डाल रही थी। तभी वह उठकर उनकी पीठ पर बैठ गया। सन्त जी ने कहा, "संभल जाओ नहीं तो बेचारे गिर जायेंगे।" गिरिजाबाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया "मैं उन्हें बिल्कुल नहीं गिरने दूँगी। मुझे मेरे बेटे हरी को पीठ पर बिठाकर काम करने की आदत है।"

सन्त एकनाथ जी शांतिब्रह्म थे तो गिरीजाबाई शांतिसरिता थी। बेचारा सज्जन गिरजाबाई के चरणों में सर रखकर बहुत रोया। माते, मुझे क्षमा कर दो, सन्त जी, मै गुनहगार हूँ। सन्त जी ने उसे शांत किया। उसकी पूछताछ की। उसने उन्हें सारी सच्चाई बता दी। सन्त जी ने कहा, "अरे इतनी–सी बात है तो मुझे पहले क्यों नही बताया? अब भोजन करके थोड़ी देर विश्राम करो।"

सन्त जी ने उसे सौ रुपये देकर उसे विदा किया। एक बार फिर विरोधियों को बड़ी निराशा हाथ लगी। ऐसे हमारे सन्त एकनाथ जी सहनशीलता का जीता–जागता प्रमाण थे। इसलिए उन्हें शांतिब्रह्म उपाधि से जाना जाता था। ❖

बाल कविता : राजेन्द्र निशेश

पुस्तक

हर पुस्तक ज्ञान बढ़ाती है,
जीने का गुर सिखलाती है।
कैसे बढ़ सकते हम आगे,
जीवन रहस्य बतलाती है।।

यह पुस्तक बड़ी अनूठी है,
नगीने जड़ी अंगूठी है।
इस दुनिया में क्या होता है,
सच ही कहती कब झूठी है।।

जिन खोज तिन ही पाया है,
यह अक्षर ज्ञान की माया है।
अच्छी पुस्तक ही पढ़नी है,
गुरु जी ने समझाया है।।

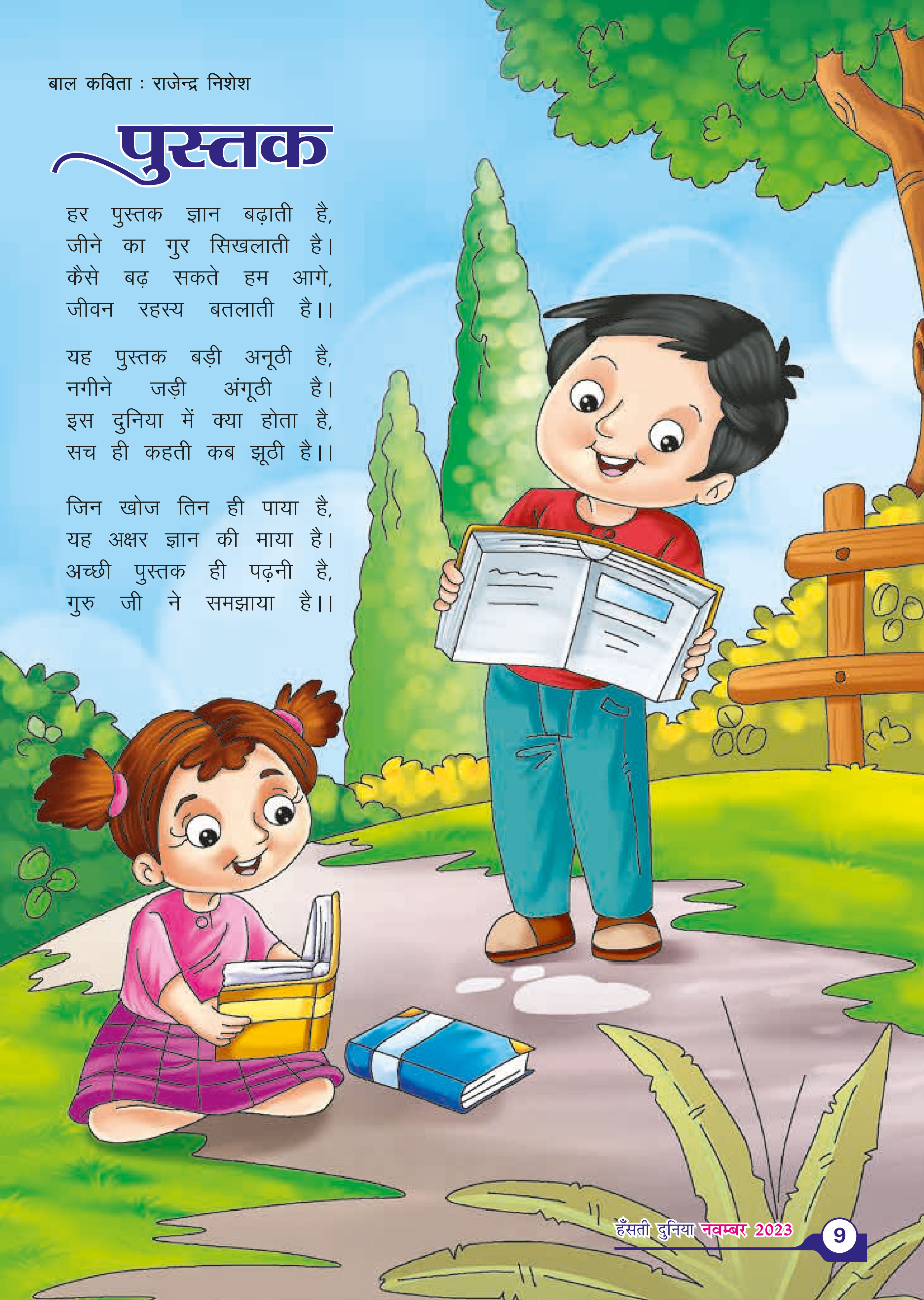

युद्ध किसने जीता

– शिखा जोशी

महाभारत में वर्णित युद्ध, वास्तव में विश्व–युद्ध ही हुआ था। उस विश्व–युद्ध में कौरव और पाण्डव दो खेमे थे। उस समय के राज्य व राजा इन्हीं दो खेमों के अन्तर्गत युद्ध कर रहे थे। इसी कारण उस विश्व–युद्ध को कौरवों और पाण्डवों के युद्ध के नाम से ही जाना जाता है।

प्रस्तुत कथा उस विनाशकारी युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद की है जो युद्ध अट्ठारह दिन चला था। उस युद्ध में अट्ठारह अक्षौहिणी सेना (एक अक्षौहिणी = लगभग एक लाख पैदल सैनिक, 70 हजार घोड़े, 22 हजार रथ और 22 हजार हाथी व उनके सवारों सहित चतुरंगी सेना का एक समूह) युद्ध की बलिवेदी पर चढ़ चुकी थी। यह युद्ध कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान में लड़ा गया था। उस युद्ध का निर्णय पाण्डवों के पक्ष में रहा था।

युद्ध की समाप्ति के उपरान्त पाँचों पाण्डव अपने–अपने स्थान पर स्वयं को युद्ध का निर्णायक समझने लगे थे। विशेषकर भीम व अर्जुन, नकुल व सहदेव। चारों भाई अपनी–अपनी वीरता बघारते न थकते थे। कभी भीम कहता– देखा द्रौपदी! कौरवों की सेना के प्रमुख महाबली दुर्योधन को आखिर मैंने ही धराशायी किया और वह दुशासन, जिसने तुम्हें केश पकड़कर घसीटा था, मैंने उसे मारकर उसके लहू से आखिर तुम्हारी माँग भर ही दी। देखा मेरा पराक्रम। सत्य ही है यदि मैं उन्हें और दूसरे बड़े–बड़े महारथियों को न मारता तो युद्ध का निर्णय हमारे पक्ष में नहीं होता।

तभी अर्जुन बोले– अरे भैया, क्या भीष्म पितामह को शस्त्र–विहीनकर बाणों की शैय्या पर मेरे सिवाय कोई ओर लेटा सकता था और तो और क्या कर्ण का सामना कोई और कर सकता था? यदि इनमें से एक भी वीर जीवित रह जाता तो वह हमारी पूरी सेना को भस्म कर देने की क्षमता रखने वाला था। यह तो मेरे बाणों का प्रभाव ही था जो वे सब धराशायी हो सके।

इसी प्रकार कोई कुछ तो कोई कुछ बोलता रहा। परन्तु युधिष्ठर चुपचाप भगवान कृष्ण की ओर देखने लगे जो वहाँ उपस्थित रहकर केवल मुस्कुरा ही रहे थे। अन्त में श्रीकृष्ण ने कहा– चलो, फैसला एक ऐसे व्यक्ति से करवा लेते हैं जिसने वह पूरा युद्ध स्वयं अपनी आँखों से देखा है।

–वह कौन है प्रभु?– युधिष्ठर बोले।

तब कृष्ण जी ने उन्हें बताया– वह महाराजा बर्बरीक है।

–कौन बर्बरीक?– युधिष्ठर ने पुनः कहा।

कृष्ण जी ने बताया– युद्ध आरम्भ होने से पूर्व बर्बरीक भी युद्ध क्षेत्र की ओर चल दिये थे। यह मुझे गुप्तचरों ने आकर बता दिया था परन्तु वे किसकी ओर से युद्ध करेंगे, यह मालूम नहीं था। अतः मैं वेश बदलकर उनके पास गया और पूछा– आप युद्ध करने आये हैं।

–नहीं, मैं क्षत्रिय हूँ परन्तु मैं न तो यहाँ किसी का दुश्मन हूँ और न ही मित्र। इसलिए युद्ध करने नहीं आया।

–फिर आप क्या करने आये है?– मैंने पूछा।

–मैंने सुना है कौरव और पाण्डव दोनों ही बहुत वीर योद्धा हैं। मैं उनका युद्ध अवश्य देखना चाहता हूँ। हाँ, यदि कोई पक्ष हार रहा होगा, तब मैं उसी के पक्ष में युद्ध करूँगा।– बर्बरीक बोले।

कृष्ण ने कहा— ठीक है, मैं चलता हूँ अपनी राह पर।

बर्बरीक बोले— हे अतिथि देव आप क्षत्रिय के पास से खाली हाथ लौटेंगे तो यह मेरी मर्यादा और आन के खिलाफ होगा।

आप मुझसे कुछ माँग अवश्य लें। अपनी आन को रखने के लिए मैं कुछ भी दे सकता हूँ।

कृष्ण बोले— ठीक है, तो फिर मुझे तुम्हारा सिर ही चाहिए। (यहाँ सिर लेना गर्वित एवं शक्तिशाली व्यक्ति के अहंकार को तोड़ने का प्रतीक है या फिर उसे तर्क में हरा देने का प्रतीक भी हो सकता है अथवा ब्रह्मज्ञान देकर उसके अहंकार को मिटा देना भी हो सकता है।)

बर्बरीक बोला— ठीक है परन्तु मेरी एक अभिलाषा युद्ध देखने की थी। यदि वह पूरी हो जाती तो ठीक था।

कृष्ण बोले— चलो तुम्हारी यह अभिलाषा पूरी हो जायेगी। तुम पूरा युद्ध देख सकोगे।

इस प्रकार राजा बर्बरीक ने यह युद्ध पूरा देखा है। फिर कृष्ण उसी के पास पाण्डवों को ले गये।

वहाँ पहुँचकर कृष्ण ने उससे पूछा— हे महाराज बर्बरीक! तुम इन पाँचों पाण्डवों में से किसे युद्ध का निर्णायक समझते हो। किसने सबसे अधिक योद्धा मारे हैं?

कुछ पलों की चुप्पी के उपरान्त वह बोला— इन अट्ठारह दिनों में मुझे तो केवल सुदर्शन चक्र (कृष्ण जी का संहारक यंत्र) ही सबके सिर काटता दिखाई दिया हैं (अर्थात् सब ओर इस प्रभु का ही रूप—विस्तार आदि देखा है) और किसी का कुछ नहीं देख पाया मैं।

यह उत्तर सुनकर सभी पाण्डव अपना—सा मुँह लेकर रह गये। उनके ज्ञान—चक्षु खुल गये कि इस विश्व में सभी कुछ करने वाला तो स्वयं प्रभु ही है फिर भला अहंकार किस बात का और किस कार्य पर। सभी पाण्डवों ने श्रीकृष्ण के चरणों में सिर झुका दिया।

—वास्तव में सम्पूर्ण विश्व में सभी लोगों से यह प्रभु कुछ न कुछ कार्य व सेवा करवा रहा है; जिन लोगों के ज्ञान—चक्षु खुल जाते हैं, उन्हें प्रत्येक कार्य में इसी प्रभु का रूप दिखाई देने लगता है अन्यथा उसे प्रत्येक कार्य में केवल अपना—आप ही दिखाई देता है। इसी से उन्हें अहंकार हो जाता है इसलिए सन्त हमें प्रभु—परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं ताकि अहंकार से दूरी ही रहे। ❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

साहूकार हमेशा सोचता रहता कि उसके बाद उसका कारोबार कौन संभालेगा?
एक दिन उसे एक तरकीब सूझी।
उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और कहा–
जो कोई भी सबसे कम पैसों में मेरा पूरा कमरा भर देगा वही मेरा कारोबार संभालेगा।

तीनों बेटे अलग–अलग दिशा में चल दिये।

सबसे छोटा बेटा एक रूई की दुकान पर गया।

पिताजी, ये देखो मैंने सिर्फ 2000 रूपये में आपका कमरा भर दिया।

बेटे ये क्या है?
पिताजी, मैंने सिर्फ 1000 रूपये में फूल, पत्ते, लकड़ी से कमरा भर दिया।

अरे! बेटे तुम कमरे में अंधेरा करके क्यों खड़े हो?
पिताजी, देखो मैं मोमबत्ती जला कर इस कमरे को रोशनी से भर दूँगा।

शाबाश! बेटे।
तुम ही मेरा कारोबार सम्भालने योग्य हो।
तो देखा बच्चों, बुद्धिमान और सक्षम व्यक्ति ही असली हक का पात्र होता है।

दादा के उत्तर

प्रश्न : आपकी नजर में दुनिया की सबसे बढ़िया चीज क्या है?

उत्तर : आत्म–दर्शन।

प्रश्न : किसी कार्य में सफल होने के लिए सबसे अच्छी साधना कौनसी है?

उत्तर : दृढ़ विश्वास, कड़ी मेहनत, शुद्ध भावना और योग्य साधन।

प्रश्न : भगवान बुरे लोगों को पैदा ही क्यों करता है?

उत्तर : भगवान इन्सान पैदा करता है, भाई। बुरे–भले तो बाद में लोग स्वयं ही बन जाते हैं।

प्रश्न : स्वाभिमानी व्यक्ति कब ठोकर खाता है?

उत्तर : जब उसे स्वाभिमान के पर्दे में अहंकार जकड़ लेता है।

प्रश्न : हमें अच्छे काम करने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : अच्छे आदमियों का संग।

प्रश्न : धर्म बड़ा है या राष्ट्र?

उत्तर : इनका मुकाबला कैसा? यदि धर्म होगा तो राष्ट्र बचेगा और यदि राष्ट्र होगा तो धर्म रहेगा।

प्रश्न : सपने अधूरे क्यों रह जाते हैं?

उत्तर : क्योंकि वे सपने होते हैं। वास्तविकताएँ नहीं।

प्रश्न : जब एक आँख से सब कुछ दिखाई देता है तो भगवान ने दो आँखें क्यों बनाई?

उत्तर : ताकि संसार का झूठ अच्छी तरह दिखाई दे।

प्रश्न : मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन और मित्र कौन है?

उत्तर : वह स्वयं।

प्रश्न : आज के इन्सान की अहमियत क्या है?

उत्तर : यदि इन्सान नहीं तो कुछ भी नहीं।

प्रश्न : इन्सान किसके ऊपर भरोसा करे। अपने आप पर या भगवान पर?

उत्तर : अपने आप पर भरोसा करे तो भगवान पर स्वयं ही हो जाता है।

प्रश्न : लोग इन्सानियत से ज्यादा पैसे को महत्व क्यों देते हैं?

उत्तर : अज्ञान के वशीभूत होने के कारण।

प्रश्न : इन्सान को क्रोध क्यों आता है?

उत्तर : सहनशीलता की कमी के कारण।

प्रश्न : चापलूसों की क्या पहचान है?

उत्तर : जो हर समय और हर बात पर निष्पक्ष राय रखने की बजाए केवल 'जी', 'हाँ जी', 'बिल्कुल ठीक' आदि शब्दों का प्रयोग करके हमारी हाँ में हाँ मिलाते रहें।

प्रश्न : माँ का आशीर्वाद कब तक प्राप्त करें?

उत्तर : माँ का आशीर्वाद अमर है; कब तक का सवाल ही नहीं।

प्रश्न : इन्सान बुद्धिहीन कब हो जाता है?

उत्तर : इन्सान जब क्रोध, ईर्ष्या और अहंकार के वश हो जाता है।

प्रश्न : इन्सान को भाग्य के सहारे पर रहना चाहिए या कर्म के?

उत्तर : कर्म के; क्योंकि कर्म से ही भाग्य बनता है; जिसका वह आसरा लेता है।

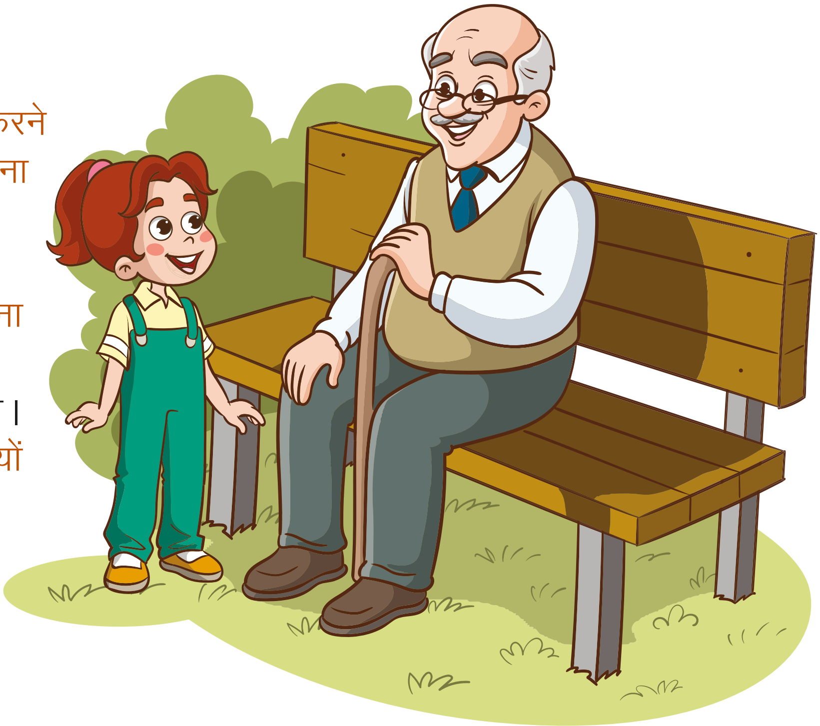

प्रश्न : किसी का भला चाहने या करने पर भी बुराई का सामना करना पड़े तो ऐसे में क्या करें?

उत्तर : अच्छाई पर दृढ़ रहें।

प्रश्न : अपने और पराये में कितना अन्तर होता है?

उत्तर : केवल अपनी विचारधारा का।

प्रश्न : पक्का दोस्त कभी दुश्मन क्यों बन जाता है?

उत्तर : सच्चा दोस्त कभी दुश्मन बन नहीं सकता।

प्रश्न : अच्छा वक्त किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसे हम अच्छा समझते हैं।

प्रश्न : अगर मन विचलित हो जाए, कहीं भी न लगे तो क्या करना चाहिए?

उत्तर : प्रभु का सुमिरण करना चाहिए।

प्रश्न : क्या मार्ग वही ठीक है जिससे शान्ति तथा सुख मिल सके?

उत्तर : हाँ।

प्रश्न : सबसे अच्छा गुण कौनसा है?

उत्तर : मानवता।

प्रश्न : यदि दुनिया में सब ही सच बोलना शुरू कर दें तो?

उत्तर : खुशियाँ मिलेंगी।

प्रश्न : हमें किससे डरना चाहिए?

उत्तर : अपने बुरे कर्मों से।

प्रश्न : इन्सान को परिश्रम पर अधिक निर्भर रहना चाहिए या भाग्य पर।

उत्तर : भाग्य परिश्रम का ही फल है।

प्रश्न : अहं मिटाने का क्या उपाय है?

उत्तर : अपनी गलतियों को याद रखकर नम्रता से उसे स्वीकार करके।

प्रश्न : क्या आँखों देखी बात पर विश्वास करना चाहिए?

उत्तर : बात तो दिखाई नहीं देती हाँ आँखों देखी घटनाएँ कई बार छलावां भी होती हैं। इसलिए निर्णय लेते समय स्वविवेक का सहारा अवश्य लेना चाहिए।

प्रश्न : इन्सान के स्वभाव की पहचान कैसे की जा सकती है?

उत्तर : उसके व्यवहार से।

प्रश्न : सेवा कैसी और किसकी करनी चाहिए?

उत्तर : हर प्रकार की तथा गुरुजनों की करनी चाहिए।

प्रश्न : दूसरों के लिए आदमी का बर्ताव कब बदल जाता है?

उत्तर : जब उसका स्वार्थ उस पर हावी होने लगे और वह दूसरे को अपने से अलग समझने लगता है।

प्रश्न : इन्सान को बुरा कौन बनाता है?

उत्तर : उसके कर्म।

हर जीव में अलग-अलग गुण

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

सुबह हुई। मुर्गे ने बांग लगाई। तनिष्क की आँखें खुलीं। वह बिस्तर से उठ बैठा और दौड़ता हुआ मम्मी के पास जा पहुँचा।

तनिष्क ने मम्मी से पूछा, 'यह मुर्गा रोज इसी समय बांग क्यों देता है?'

'तुम्हें जगाने के लिए। वरना तुम जल्दी कहाँ उठने वाले हो?' मम्मी ने तनिष्क के सिर पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया।

'तभी तो इसे 'ठीक समय देने वाली घड़ी' भी कहा जाता है। है न मम्मी?', तनिष्क बोला।

'हाँ, बेटा।' मम्मी का संक्षिप्त-सा उत्तर था।

गाँव के उस सुरम्य वातावरण में तनिष्क का हर एक दिन नये जोश व उमंग से भरा हुआ रहता था। वह खुशी-खुशी अपनी दिनचर्या पूरी करता था। उसे मम्मी-पापा के अलावा दादा-दादी का सान्निध्य भी तो मिल रहा था।

कुछ ही देर बाद तनिष्क शीतल, मंद और सुगंधित हवा का आनंद लेने के लिए घर की छत पर गया। वहाँ का मोहक दृश्य देखा तो मन खुशी से झूम उठा। दरअसल, काफी देर से एक मोर अपने पंखों को फैलाए हुए मस्ती में नाच रहा था। तनिष्क उसे अपलक निहारने लगा। तभी मम्मी ने आवाज लगाई, 'तनिष्क बेटा, पंछियों के खाने के लिए छत पर दाने तो डाल देना?'

'हाँ, मम्मी। अभी आया।' कहता हुआ वह नीचे कमरे में मम्मी के पास पहुँचा और एक कटोरे में मक्का, गेहूँ, बाजरा और चने के दाने भर लाया। उसने ये दाने छत पर बिखेर दिए। मोर ने कुछ दाने खाए और उड़ गया। लेकिन तनिष्क की आँखों के सामने मोर की वही मोहक मुद्रा घूम रही थी।

इसी बीच दादा जी ने तनिष्क को पुकारा, 'तनिष्क बेटे, क्या घूमने के लिए नहीं चलना है?'

'चल रहा हूँ दादा जी।' तनिष्क ने जवाब दिया।

तनिष्क छत से नीचे आया और सैर के लिए दादा जी के साथ चल पड़ा। ज्योंही वे दोनों घर से बाहर निकले, टॉमी भी अपनी पूँछ हिलाता हुआ उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। टॉमी को ऐसा करते देख दादा जी से बिना बोले नहीं रहा गया। उन्होंने तनिष्क से कहा, 'देखो तो, यह मूक प्राणी भी हमसे कितना प्यार करता है, कितना लगाव है इसे हमसे और हाँ, इसकी वफादारी के किस्से तो दुनियाभर में मशहूर हैं। तभी तो इसे 'सजग प्रहरी' कहा जाता है।'

‘हाँ, दादा जी।’ तनिष्क हामी भरते हुए बोला। फिर दोनों तेज कदमों से आगे बढ़ने लगे।

अभी वे कुछ ही दूर चले थे कि एक पेड़ पर बैठी कोयल कू–कू करती हुई मीठा–मीठा गीत गा रही थी। तनिष्क के कानों में मानो मिसरी घुल गई थी। वह पूरी तल्लीनता से खड़े होकर सुनने लगा। दादा जी उसके मन के भावों को समझ चुके थे। वे भी तनिष्क की बगल में ही खड़े हो गए।

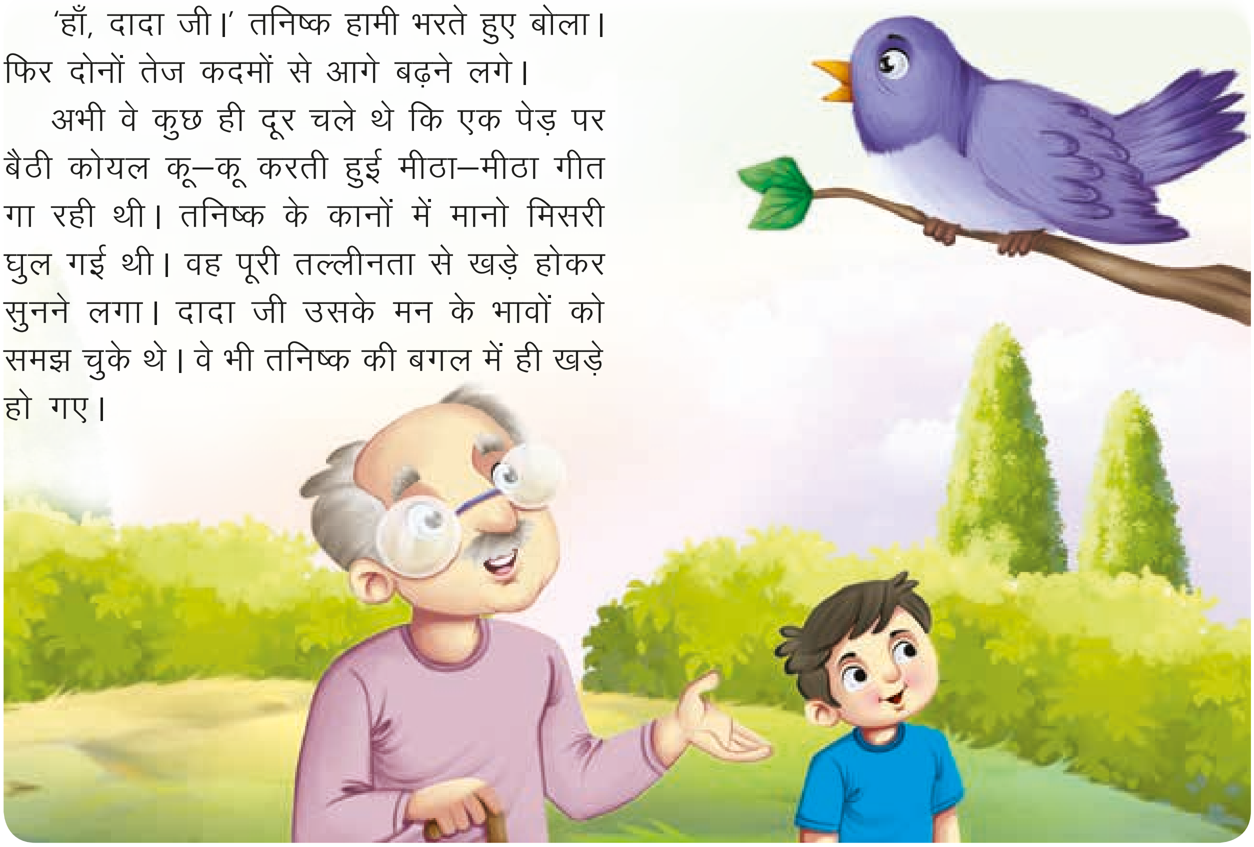

दादा जी ने तनिष्क को बताया, ‘यह नर कोयल है जिसकी मधुर वाणी तुम्हें मोहित कर रही है।’

‘नर कोयल? क्या मादा कोयल नहीं गाती है?’ तनिष्क ने उत्सुकता से पूछा।

‘नहीं, मादा कोयल नहीं गाती है। और सुनो, कोयल बहुत चालाक भी होती है। यह कभी जमीन पर भी नहीं उतरती है, सिर्फ पेड़ पर ही निवास करती है। यह झारखंड प्रदेश की राजकीय पक्षी है।’ दादा जी बोले।

‘वाह दादा जी वाह! ईश्वर की भी कैसी लीला है?’ तनिष्क ने मुस्कुराते हुए दादा जी की तरफ देखा।

एक पेड़ के नीचे कुछ पौधों पर भौंरे मंडरा रहे थे। तनिष्क से नहीं रहा गया।

तनिष्क बोला, ‘ये भौंरे इन पौधों पर क्यों मंडरा रहे हैं दादा जी ?’

‘ये फूलों पर मंडराकर परागण की क्रिया करते हैं। तभी तो पौधों से फल मिलते हैं।’ दादा ने तनिष्क की जिज्ञासा शांत की।

‘समझ गया दादा जी।’ तनिष्क ने कहा।

इसी बीच तनिष्क को भेड़ों का एक झुंड आता हुआ दिखाई दिया। भेड़ें धीरे–धीरे अपनी मस्ती में चल रही थीं। चरवाहा अपने कंधे पर लाठी रखे हुए भेड़ों के साथ–साथ ही चल रहा था।

तनिष्क के मन में फिर एक नया विचार कौंधा। वह दादा जी से प्रश्न कर उठा।

तनिष्क बोला, ‘ये भेड़ें अपना रास्ता किस तरह याद रखती हैं दादा जी?’

‘क्योंकि ये हमेशा झुंड में चलती हैं एक–दूसरे के आगे–पीछे।’ दादा जी ने समाधान किया।

‘झुंड में ये सुरक्षित भी रहती हैं।’ दादा जी पुनः बोल पड़े।

दादा जी ने उत्तर दिया, 'जब कौवा कांव–कांव की ध्वनि निकालता है, पुरानी विचारधारा है कि घर में कोई अतिथि आने वाला होता है।'

तभी तनिष्क की मम्मी उसके पापा से कह रही थी, 'सुनो जी, मैं तो बताना ही भूल गई थी कि आज तनिष्क के चाचा जी आने वाले हैं।'

'लो, कौवे की भविष्यवाणी भी सही हो गयी है।' तनिष्क ने मम्मी की बातें सुनकर दादा जी से कहा।

तनिष्क के साथ–साथ दादा जी भी हँसे बिना नहीं रह सके। आज तनिष्क ने भली–भांति यह जान लिया था कि हर जीव में अलग–अलग गुण मिलते हैं जिसकी वजह से जीवों का अस्तित्व धरती पर बना हुआ है।

'हमें भी अपने गुणों को बनाए रखना चाहिए, इसी में समझदारी है।' दादा जी ने तनिष्क को अनमोल सलाह दी। ❖

'इसलिए 'भेड़चाल' मुहावरा बना होगा, दादा जी।' तनिष्क हँसते हुए बोल पड़ा।

'शायद।' दादा जी ने कहा।

काफी समय हो चुका था। दोनों घर के लिए वापस मुड़ गए। कुछ ही देर में तनिष्क और उसके दादा जी घर आ पहुँचे थे।

घर की मुंडेर पर बैठा हुआ एक कौवा 'कांव–कांव' किए जा रहा था।

तनिष्क ने दादा जी फिर सवाल किया। वह बोला, 'कौवा, 'कांव–कांव' क्यों करता है दादा जी?'

लो फिर से आ गई दिवाली

– डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

मन में उठी उमंग निराली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

कहीं बताशे, कहीं मिठाई,
लड्डू, बर्फी, रसमलाई।
चुनमुन देख–देख ललचाए,
उसके मुँह में पानी आए।।

दादी जी करतीं रखवाली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

टिम–टिम करते तारे जैसे,
घर–घर जलते दीपक ऐसे।
डरकर भाग गया अंधियारा,
आया एक नया उजियारा।।

चारों ओर छाई खुशहाली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

ऐसे दीपावली मनाएँ

भेदभाव के अन्धकार को,
द्वेष–क्लेश, मन के विकार को,
आओ सब मिल दूर भगाएँ।
ऐसे दीपावली मनाएँ।

अभिमानों को पस्त–ध्वस्त कर,
गरिमा की फुलझड़ी जलाकर,
प्रेम प्यार को हम अपनाएँ।
ऐसे दीपावली मनाएँ।

आलसपन का त्याग करें हम,
मेहनत से हर काम करें हम,
कपट झूठ को सबक सिखाएँ।
ऐसे दीपावली मनाएँ।

कहानी डायनासोर की, उसी की जुबानी

– गोपाल जी गुप्त

आज से अरबों–करोड़ों साल पहले धरती का विकास हो रहा था तब चारों ओर जल ही जल था। न तो कहीं पर्वत थे, न वनस्पतियाँ। फिर लाखों–करोड़ों ज्वालामुखी धरती का सीना चीरकर फूटी और धरती के धरातल पर पठार और मैदानी इलाके बनने शुरू हुए। धीरे–धीरे वनस्पतियाँ उगीं, पर्वतमालाएँ बननी शुरू हुईं, अनन्त सागर से पर्वत निकलने शुरू हुए। आज जहाँ पर्वत दिखते हैं वहाँ कभी विशाल सागर था, अथाह जल ही जल।

अब से लगभग 21 करोड़ साल पहले धरती पर कुछेक जीवधारियों के जन्म हुए। जिनमें से मैं, यानी डायनासोर भी, एक था। तब तक मनुष्य का अस्तित्व भी नहीं था। हाँ, तो मैं बता रहा था कि मेरी भी एक प्रजाति का जन्म हुआ। धीरे–धीरे मेरी वंश वृद्धि होने लगी और मेरी अनेक प्रजातियाँ उत्पन्न हुईं। जिनमें कुछ विकराल शरीर वाले थे। कुछ छोटे आकार वाले, कुछ भयंकर, कुछ शान्त, कुछ चौपाये, कुछ शाकाहारी, कुछ मांसाहारी, कुछ जल में रहते थे। कुछ जमीन पर यानी हमारी सभी जातियों के निवास, आकार, आहार, प्रकृति में अन्तर मौजूद था। कुछ प्रजातियों को सींग भी थे। कुछ आगे के पैरों पर खड़े होकर चलते थे कुछ पिछले पैर से। हमारी सबसे बड़ी प्रजाति की लम्बाई 30 मीटर थी। हमारी लगभग 250 प्रजातियाँ उत्पन्न हो गयी थीं। जिनका वजन 100 टन तक था।

हमारी सारी प्रजातियाँ अंडे देती थीं। मादा एक बार में 15–20 तक अंडे देती थी। अंडे देने के पहले मादा लगभग 45 सेंटीमीटर व्यास का लगभग 10 सेंटीमीटर गहरा गोलाकार गड्ढा बनाती थी और उसी में अंडा देती थी। अंडा देने के बाद यह नर की जिम्मेदारी थी कि वह अंडा सेये, मादा तो अंडा देने के बाद चली जाती थी। हमारे शावक खुद ही अंडे का कवच तोड़कर बाहर निकलते थे। हमारी कुछ प्रजाति के अंडे वृत्ताकार होते थे कुछ के गोल–मटोल।

हमारी प्रजाति ने इस धरती पर लगभग साढ़े चौदह करोड़ वर्ष तक एकछत्र राज्य किया। उसके बाद, अर्थात् साढ़े छह करोड़ वर्ष पहले, एक बाहरी ग्रह धरती से टकराया जिससे गैस के साथ धूल तथा इरोडियम नामक तत्व वायुमंडल में फैला और हमारा अस्तित्व समाप्त हो गया। हम धरती के गर्भ में विलीन हो गये और आपको अपनी कहानी सुनाने के लिये मैं कंकाल बनकर रह गया और वैज्ञानिकों ने हमारे कंकाल से ही अध्ययन किया।

ब्रिटिश अन्वेषक सर रिचर्ड ओवेन ने 19वीं शताब्दी के पाँचवें दशक में, सन् 1842, हमारे विशालकाय कंकाल को देखकर हमारा नामकरण किया 'डायनासोर' जो ग्रीक शब्द डायनस (विशाल) सॉरस (छिपकली) को ही मिलाकर बना था। वैसे हमारी सबसे छोटी प्रजाति बिल्ली के आकार की भी थी।

नोबेल पुरस्कार प्राप्त अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. लुइस अल्वारेज तथा रूसी वैज्ञानिक मिखाइल नाज़ारीब ने चट्टानों का विशेष अध्ययन किया तथा हमारे अस्तित्व को मिटाने वाले बाह्य ग्रह के टक्कर की पुष्टि भी की है।

चलते–चलते मैं बता दूँ कि मेरी एक प्रजाति 'नैन्सी–प्लेसिओसोर' आज भी मौजूद है। यह जलचर है जो रूस की बेकाल झील, न्यूयॉर्क से बारमेंट के जलमार्ग, दक्षिण अफ्रीका की विक्टोरिया झील, चिली, नार्वे, कोलम्बिया, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, आइसलैंड, कनाडा तथा ब्रिटेन की लॉच नेस झील में देखी गयी है। नैन्सी जल में 120 से 125 किलोमीटर की गति से तैरती है। इसकी लम्बाई 15 से 21 मीटर के बीच की होती है। बर्मिंघम विश्वविद्यालय के डॉ. टामर, बोस्टन के डॉ. रायंस, अमेरिका के डॉ. जॉर्ज न्यूटन, शिकागो विश्वविद्यालय के डॉ. मैकाले आदि ने सन् 1934 में ब्रिटिश अखबारों में ह्यूक ग्रे तथा आर. के. विल्सन द्वारा नैन्सी के खीचे गये चित्रों के प्रकाशन के पश्चात् अध्ययन किया। ये चित्र डेली मेल, डेली रिकार्ड, डेली स्केच नामक समाचार–पत्रों ने प्रमुखता से छापे थे। अकादमी ऑफ अप्लाइड साइंसेज (बोस्टन) के डॉक्टर रायंस ने अकेले लॉच नेस झील के 8000 से भी अधिक चित्र खीचे जिसमें 'नैन्सी–प्लेसिओसोर' स्पष्ट रूप से थी। उन्होंने इसे डायनासोर की ही एक प्रजाति मानी है।

वैसे सन् 1981–82 में भारत के गुजरात राज्य में हमारे अंडे के जीवाशम मिलने से भारतीय वैज्ञानिकों ने भी अनुसंधान प्रारम्भ कर दिये तथा हमारी उपस्थिति को इस भारत की भूमि पर भी प्रमाणित किया।

शायद कोई लेबोरेटरी में आ रहा है, मुझ कंकाल को बोलते देखकर वह भय से मूर्छित हो जाएगा। इसलिये मैं अब चुप हो रहा हूँ फिर कभी और भी बतलाऊंगा। ❖

आकाशगंगा

– डॉ. दिनेश चमोला

जो ब्रह्माण्ड में अनगिन तारे,
अस्त–व्यस्त से रहते।
वृहद गुच्छ में वे मिलते हैं,
चौकन्ने व जगते।।

उन तारों का वृहद समूह,
रज व निम्न घनत्व की गैसें।
निज गुरुत्व से बँधकर रहती,
ये गंगाएँ जैसी।।

सचमुच, ये नभगंगाएँ ही,
गैलेक्सी कहलाती।
ये ही अपनी सुन्दरता से,
नभ का मान बढ़ाती।।

उस ब्रह्माण्ड की भवन खंड है
होती, नभ गंगाएँ।
तारकगुच्छों की प्रतिनिधि सी,
मिलती दाएँ–बाएँ।।

शोध बताते इस ब्रह्माण्ड में,
हैं अनगिनत गंगाएँ।
प्रति गंगा में अनगिनत तारे,
जो सबको हर्षाएँ।।

निज आकारों के हिसाब ये,
तीन तरह की होती।
कुछ सर्पिल, कुछ दीर्घवृत्तीय,
कुछ हैं अनियमित होती।।

इस ब्रह्माण्ड में मिलती हैं कुछ,
गंगाएँ चमकीली।
सर्पिल किन्तु बड़ी दूजों से,
गोया हो रौबीली।।

हम जिस गैलेक्सी में आते,
वह मंदाकिनी कहलाती।
नाभिक से प्रकट, व्यवस्थित तारे,
सर्पिल में दिख जाते।।

पृथ्वी से मंदाकिनी पूरी,
नहीं दिखाई देती।
महज यहाँ का खंड चित्र ही,
आँखें हमें दिखाती।।

बात न यह राजा रानी की,
और नहीं यह किस्सा।
इसका कारण बल्कि धरा भी,
मंदाकिनी का हिस्सा।।

एक लाख प्रकाश वर्षों तक,
मिल्की वे की सीमा।
दीर्घकाल तक है चल सकती,
बिना किए कुछ बीमा।।

सभी उपग्रह सूर्य सहित हैं,
दूर अवस्थित इससे।
तीस हजार प्रकाशवर्ष है,
केन्द्रीय क्षेत्र से इसके।।

सचमुच दृश्य सभी मनभावन,
लगते सबको प्यारे।
कुदरत की यह विपुल सम्पदा,
कब से पास हमारे।।

सकल सृष्टि में कितने अद्‌भुत,
जग के दृश्य हमारे।
वैज्ञानिकता के संग देखें,
इसके भव्य नजारे।।

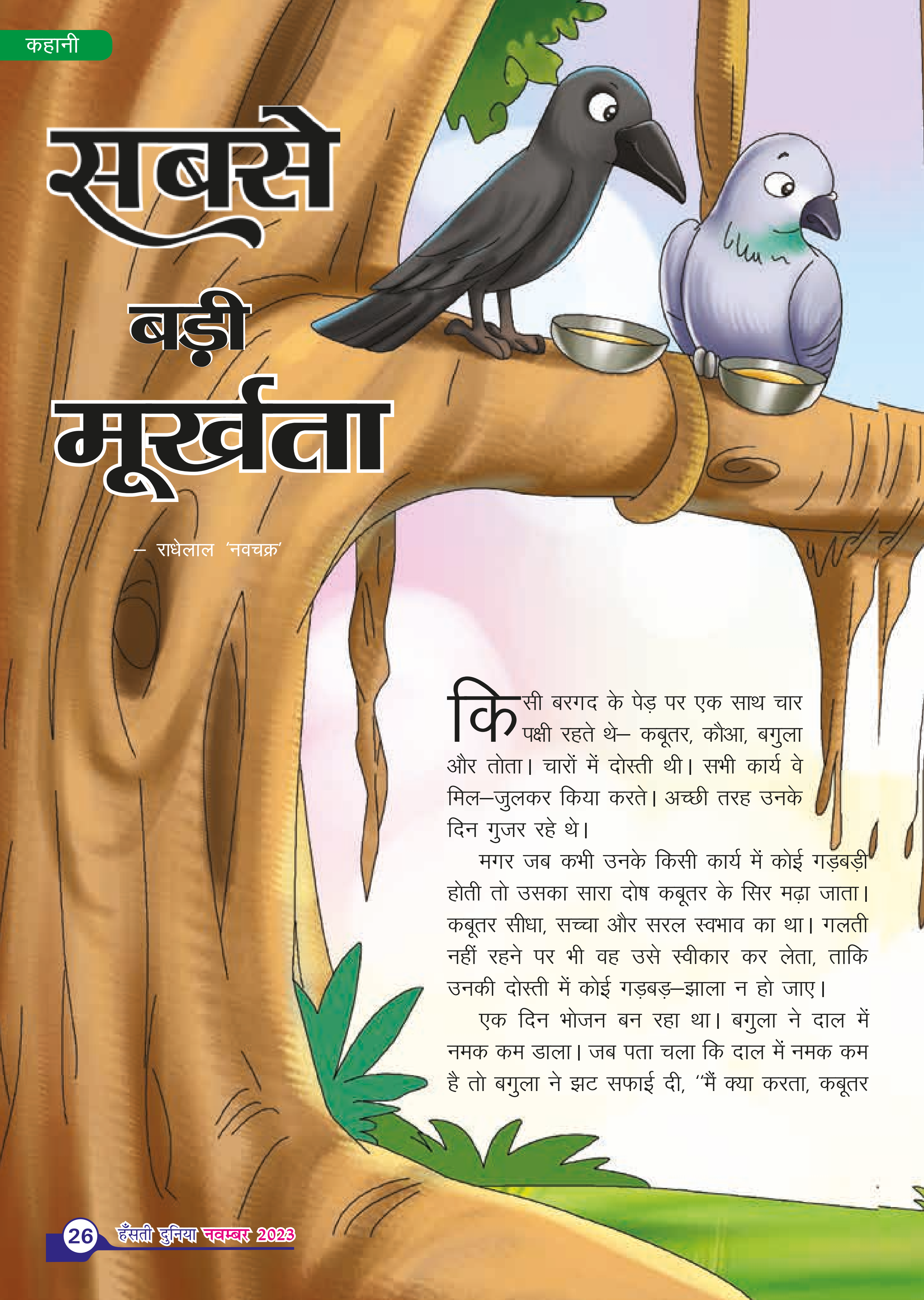

सबसे बड़ी मूर्खता

– राधेलाल 'नवचक्र'

किसी बरगद के पेड़ पर एक साथ चार पक्षी रहते थे– कबूतर, कौआ, बगुला और तोता। चारों में दोस्ती थी। सभी कार्य वे मिल–जुलकर किया करते। अच्छी तरह उनके दिन गुजर रहे थे।

मगर जब कभी उनके किसी कार्य में कोई गड़बड़ी होती तो उसका सारा दोष कबूतर के सिर मढ़ा जाता। कबूतर सीधा, सच्चा और सरल स्वभाव का था। गलती नहीं रहने पर भी वह उसे स्वीकार कर लेता, ताकि उनकी दोस्ती में कोई गड़बड़–झाला न हो जाए।

एक दिन भोजन बन रहा था। बगुला ने दाल में नमक कम डाला। जब पता चला कि दाल में नमक कम है तो बगुला ने झट सफाई दी, "मैं क्या करता, कबूतर

नमक समय पर लाया ही नहीं, जो थोड़ा–सा था, वहीं मैंने दाल में डाल दिया।''

बगुले की बात पर कबूतर ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की। चुप रहा। नमक तो आ ही गया था। अलग पैकेट में बंद पड़ा था। आलसवश बगुला नये पैकेट को खोलकर दाल में नमक नहीं डाला। कबूतर ने यह स्पष्टीकरण नहीं दिया। सोचा, बगुला बुरा मान जाएगा। दोस्ती टूट सकती है। चुप रहना ही ठीक समझा।

एक बार कौआ की असावधानी से तेल का पीपा लुढ़क गया। झट उसने कबूतर को झिड़क दिया, ''तुम किस जगह तेल का खुला पीपा रखते हो? सारा तेल गिरकर बह गया।''

कबूतर कह सकता था, ''पीपा तो ठीक ही जगह रखा था। देखकर कोई काम करना चाहिए। हड़बड़ काम शैतान का होता है। मगर उसने ऐसा नहीं कहा। चुप्पी साध ली। बात बनाने पर कौआ दुःखी हो जाता। मेल नहीं रहता।

ऐसे ही एक दिन तोता बाजार से कोई फल खरीदकर लाया। फल सड़ा निकला। तोते ने इसका दोष कबूतर के सिर यों मढ़ा, ''पैसे ही कबूतर ने मुझे देर से दिये। बाजार पहुँचते–पहुँचते अंधेरा घिर आया था। फल वाले ने अंधेरे का लाभ उठाकर मुझे सड़े फल दे दिए।''

बात ऐसी नहीं थी। कबूतर ने तोते को बहुत पहले पैसे दिये थे। तोता ही देर से बाजार के लिए

चाहते। दूसरे पर मढ़ने की कोशिश करते हैं। यह अच्छी आदत नहीं है। दोस्ती टूटने से आज हम सब की परेशानी ज्यादा बढ़ गयी है, पहले से ज्यादा दुःखी हैं। याद रहे, मिलकर रहने में जो सुख है, आनन्द है; वह एकाकीपन में कभी नहीं हो सकते।''

''बिल्कुल सही कहा?'' सबने स्वीकारा।

''हम चाहें तो फिर

निकला था। तोता जानता था, वह जो कुछ कहेगा, कबूतर कभी उसकी बात का विरोध नहीं करेगा। सहज स्वीकार लेगा। अतएव उसने अपनी गलती बेझिझक कबूतर के सिर मढ़ दिया। मौन रहकर कबूतर ने उसे स्वीकार भी कर लिया ताकि आपसी प्रेम बना रहे। दोस्ती निभती चले।

इस तरह सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था। वर्षों मजे से गुजरे।

कुछ दिनों के बाद कोई जरूरी काम से कबूतर दो सप्ताह के लिए बाहर चला गया। जब वह लौटकर आया तो उस पेड़ पर किसी को नहीं देखा। वह बहुत चिन्तित हुआ। उसने तीनों की खोज–खबर लेनी शुरू कर दी। बगुले से भेंट हुई तो पता चला कि आपसी मतभेद की वजह से तीनों लड़–झगड़ कर एक–दूसरे से अलग हो गए। दोस्ती टूट गयी।

कबूतर ने फिर सबको एक जगह एकत्र किया और कहा, ''हम लोगों में एक ही बुराई है जिसकी वजह से हमारी दोस्ती टूटी।''

''क्या बुराई है?'' सबने एक साथ पूछा।

''हम अपनी गलतियों को स्वीकार करना नहीं

मिलकर एक साथ रह सकते हैं। सुख और आनन्दपूर्ण जीवन जी सकते हैं। मगर एक शर्त हैं। हम में से जिस किसी से जब भी कोई गलती हो, उसे दूसरे पर कभी न मढ़ें। अपनी गलती सहज स्वीकार कर लें। इससे हम छोटे नहीं हो जाएंगे बल्कि यह हमारा बड़प्पन होगा। हमारी दोस्ती पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वह गहरी होती चली जाएगी। सभी का जीवन सुखमय–आनन्दमय होगा। गलती तो जीवन में हर किसी से होती है। उसे स्वीकार कर ही हम उसमें सुधार ला सकते हैं– है न?'' कबूतर ने सवालिया निगाह तीनों पर डाली।

''अवश्य'', तीनों की मिली–जुली आवाज आई।

''जानते हो, अपनी गलती स्वीकार नहीं करना अक्लमंदी नहीं, सबसे बड़ी मूर्खता है। इसी मूर्खता की वजह से हम एक–दूसरे से अलग होकर बिखर गए। हमारे सुख, चैन और आनन्द खो गए। हमारा जीवन नरकमय हो गया।'' कबूतर ने अपनी बात पूरी की।

''अब हम ऐसी मूर्खता कभी नहीं करेंगे। मिलकर रहेंगे।'' समवेत स्वर उभरा। ❖

अनमोल वचन

संकलनकर्ता : रामअवध राम

- धरती को स्वर्ग बनाने का एक ही तरीका है; इन्सान को इन्सानी फितरत से युक्त होना जरूरी है। ईश्वर को सीमाओं में बाँध लेना मनुष्य की अज्ञानता का प्रमाण है। प्रभु का दरवाजा ऐसा दरवाजा है जहाँ से सभी को झुककर ही गुजरना पड़ता है।
- आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है इसका मानवता की ओर जाग्रत होना बहुत जरूरी है।
- अँधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

- प्यार और सत्कार का मूल आधार है–ब्रह्मज्ञान। मानवता की माला प्रभु–परमात्मा रूपी धागे के बिना असम्भव है। जातियों और भाषाओं की भिन्नता होने पर भी इन्सान केवल इन्सान है। अपने आपको जानकर ही मानव एकता सम्भव है।
- इन्सान के सारे गुण बेकार हैं अगर उसमें इन्सानियत नहीं।

– निरंकारी मिशन का सन्देश

- सज्जनों के सत्संग से ही बुद्धि तेज होती है; वाणी से सत्य की वर्षा होती है; उन्नत गौरव प्राप्त होता है; पाप मिट जाते हैं और मन शान्त होता है।

– ब्रह्मर्षि निर्मल जोशी

- जो तेरे सामने औरों की निन्दा करता है वह औरों के सामने तेरी भी निन्दा अवश्य करेगा । **– शेख सादी**
- अच्छे कार्य करने का स्वभाव ऐसा धन है जिसे न चोर चुरा सकता है न शत्रु छीन सकता है।

– स्वामी विवेकानंद

- जिस प्रकार वृक्ष से पत्ता या छाल तोड़ने पर दूध निकल आता है। ऐसे वृक्ष मीठे फल देता है। उसी प्रकार महापुरुषों की संगति से तथा बातचीत से अच्छे फल की प्राप्ति होती है।

– सोमदेव

- यदि प्राप्त करना चाहते हो तो पहले अर्पित करो।

– सुभाषचन्द्र बोस

- मुट्ठीभर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

– महात्मा गाँधी

- प्रेम के साथ खिलाई गयी वस्तु चाहे मामूली हो, प्रशंसा किए बिना न रहो।

– सन्त काशीराम

- मानव का सच्चा जीवन साथी विद्या ही है जिससे वह विद्वान कहलाता है।

– दयानंद सरस्वती

- जलता हुआ एक दीपक हजार दीपकों को जला सकता है। इससे दीपक की आयु कम नहीं होती। इसी तरह खुशी बाँटने से कभी कम नहीं होती। **– गौतम बुद्ध**
- जिस घर में छोटे–बड़े सब मिलकर रहते हैं, वह घर अपने बल पर सदा सुरक्षित रहता है।

– अथर्ववेद

तितली मछली

– डॉ. परशुराम शुक्ल

तितली मछली दो अलग–अलग परिवारों की ऐसी मछलियों को कहा जाता है, जिनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। इनमें से एक परिवार की मछलियाँ ताजे पानी में तथा दूसरे परिवार की मछलियाँ सागर में रहती हैं। कुछ लोग ताजे पानी में पायी जाने वाली मछलियों को तितली मछली कहते हैं तथा सागर में पायी जाने वाली मछलियों को 'फरिश्ता मछली' कहते हैं। कुछ लोग इसके पूरी तरह विपरीत हैं। वे ताजे पानी की मछलियों को फरिश्ता मछली और सागर में पायी जाने वाली मछलियों को 'तितली मछली' कहते हैं। अतः तितली मछली के सम्बन्ध में कुछ भी कहने से पहले तितली मछली की स्थिति स्पष्ट करना आवश्यक है।

विश्व में ऐसी बहुत–सी मछलियां पायी जाती हैं, जिन्हें फरिश्ता मछली के नाम से जाना जाता है। इन सभी को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। पहले भाग में सागर की मुनि मछली आती है। यह शार्क की निकट सम्बन्धी है। यह फरिश्ता मछली तो है, किन्तु इसे तितली मछली कभी नहीं कहा जाता।

दूसरे भाग में पश्चिमी अफ्रीका की नदियों में पायी जाने वाली फरिश्ता मछली आती है। इसका वैज्ञानिक नाम पैन्टोडोन बछोलजी है। इसे तितली मछली भी कहते हैं। ताजे पानी की तितली मछली अपना अधिकांश समय जलीय पौधों के मध्य व्यतीत करती है। तितली मछली के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि यह पानी की सतह या हवा में चमगादड़ों अथवा पक्षियों के समान उड़ती है। इस समय यह अपनी पूरी शक्ति लगाकर छाती के बड़े–बड़े मीनपंखों को ऊपर–नीचे करके उड़ने का प्रयास करती है। तितली मछली के इस विलक्षण गुण ने जीव वैज्ञानिकों को अपनी ओर आकर्षित किया तथा सन् 1950 के बाद इस पर अनेक प्रयोग किये गये। इन प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकला कि इसके सम्बन्ध में प्रचलित सभी धाराणाएँ भ्रामक हैं। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार तितली मछली उड़ नहीं सकती, किन्तु यह दो मीटर तक ऊँची उछल सकती है।

तितली मछली एक छोटी मछली है। इसकी लम्बाई 8 सेंटीमीटर से 12 सेंटीमीटर तक होती है। तितली मछली का शरीर नाव के आकार का होता है। यह ऊपर से चपटी और नीचे से गोलाई लिये हुए होती है। इसका रंग धूसर हरे से लेकर कत्थई रूपहले तक होता है तथा इसकी पीठ एवं बगलों पर कत्थई अथवा गहरे हरे रंग के धब्बे और रेखाएँ होती हैं। तितली मछली का मुँह बड़ा होता है और ऊपर की ओर उठा रहता है। इसके नथुने लम्बे और ट्यूब के आकार के होते हैं। तितली मछली के मीनपंख सर्वाधिक विचित्र होते हैं। इसके मीनपंख सामान्य मछलियों से पूरी तरह अलग होते हैं तथा देखने में ऐसे मालूम पड़ते हैं, मानो लम्बे–लम्बे काँटे हों। तितली मछली की छाती के मीनपंख बड़े एवं पंख जैसे होते हैं तथा इनका रंग कत्थई–सफेद होता है। इसके नितम्बों के दोनों मीनपंखों का रंग भी कत्थई–सफेद होता है एवं प्रत्येक मीनपंख में चार–चार फिनरेज होती हैं। जब यह पानी में आराम करती है तो इसके नितम्बों के मीनपंख फैल जाते हैं एवं पूँछ लम्बी–सी हो जाती है। तितली मछली के बिना जोड़े वाले मीनपंख बड़े और पारदर्शी होते हैं तथा इनमें लम्बी–लम्बी फिनरेज होती हैं। इसके मीनपंखों की संरचना इस प्रकार की होती है कि यह इनका उपयोग पानी से हवा में आने के लिए कर सकती है। तितली मछली को यदि हाथ में

लिया जाये तो यह अपने मीनपंख पक्षियों के समान ऊपर–नीचे करती है, किन्तु इसके मीनपंख स्वतंत्र रूप से हवा में गति नहीं कर पाते।

तितली मछली का प्रमुख भोजन नदियों, तालाबों और झीलों में पाये जाने वाले छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े हैं। इसके साथ ही यह पानी की सतह पर गिरने वाले कीड़े–मकोड़े भी खाती है। तितली मछली पानी की सतह के निकट उड़ने वाली मक्खियों तथा इसी तरह के छोटे–छोटे जीवों को बड़ी सरलता से पकड़ लेती है और खा जाती है। कुछ जीव वैज्ञानिकों का मत है कि यह छोटी–छोटी मछलियों का भी शिकार करती है।

तितली मछली के निषेचित अंडे बहुत हल्के होते हैं एवं मादा के शरीर से निकलते ही पानी की सतह पर आ जाते हैं तथा तैरते रहते हैं। इनसे बच्चे निकलने का समय पानी के तापक्रम पर निर्भर करता है। सामान्यतया इन अंडों के लिए 30 डिग्री सेल्सियस तापक्रम आदर्श होता है। आदर्श तापक्रम पर तीन दिन में अंडों के आवरण फट जाते हैं एवं इनसे तितली मछली के छोटे–छोटे बच्चे निकल आते हैं। तितली मछली के अंडों के समान ही इसके बच्चे भी पानी की सतह पर तैरते रहते हैं तथा ये जन्म लेते ही भोजन करना आरम्भ कर देते हैं। इनका प्रमुख भोजन स्प्रिंग टेल, ग्रीनफलाई जैसे अत्यन्त छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े हैं। तितली मछली के बच्चे कुछ समय बाद बड़े हो जाते हैं और वयस्क तितली मछली के समान जीवन आरम्भ कर देते हैं।

तितली मछली को एक्वेरियम में रखकर पालतू बनाया जा सकता है किन्तु इसके लिए उथले पानी वाला बड़ा एक्वेरियम होना चाहिये। तितली मछली ऊँची कूद लगाने वाली मछली है। अतः एक्वेरियम का ऊपर से ढका होना भी आवश्यक है। एक्वेरियम में तितली मछली बड़े शौक से मक्खियाँ तथा तिलचट्टे आदि खाती है। अतः इसे पालना कोई कठिन कार्य नहीं है। तितली मछली को एक्वेरियम में रखने से इसके भोजन सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। तितली मछली

मृतजीव अथवा मृतजीवों को कभी नहीं खाती। यह जीवित कीड़े–मकोड़ों का शिकार करती है और उन्हें ही खाती है।

तीसरे भाग में सागरों और महासागरों में पायी जाने वाली शानदार रंगबिरंगी फरिश्ता मछलियाँ आती हैं। ये सभी कीटोडोन्टीडाइ परिवार की हैं। इन्हें समुद्री तितली मछलियाँ कहा जाता है। भारत में लक्षद्वीप के सागर तटों पर कीटोडोन ऑरिगा नामक एक समुद्री तितली मछली पायी जाती है।

सागरों और महासागरों में पायी जाने वाली तितली मछली की लगभग 150 जातियाँ हैं। ये सभी दूर से देखने पर एक जैसी मालूम पड़ती हैं। इनकी समानता का प्रमुख आधार इनका आकार और रंगबिरंगे पंख हैं। समुद्री तितली मछली सामान्यतया उथले पानी में रहती है और कभी–कभी मुहानों में चली जाती है। यह प्रायः समुद्री चट्टानों व मूंगे की चट्टानों के आसपास जोड़े में अथवा छोटे–छोटे झुण्डों में रहना पसन्द करती है।

समुद्री तितली मछली बड़ी सुन्दर तथा रंग बिरंगी होती है। सामान्यतया युवा और प्रौढ़ समुद्री तितली मछलियों के रंगों में इतना अन्तर होता है कि ये अलग–अलग जातियों की मालूम पड़ती हैं। समुद्री तितली मछली की आयु का इसके व्यवहार पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रायः छोटी समुद्री तितली मछली अकेले रहना पसन्द करती है और अकेले ही भ्रमण करती है। युवा समुद्री तितली मछली भी अकेले ही भ्रमण करती है किन्तु यह एक सुरक्षित स्थान पर अन्य मछलियों से निश्चित रूप से मिलती है। यह स्थान प्रायः समुद्री पौधों के मध्य या किसी चट्टान के नीचे होता है। यदि इसे सागर की तलहटी में कोई टिन का डिब्बा आदि पड़ा मिल जाये तो यह उसे भी अपने मिलने का स्थान बना सकती है।

समुद्री तितली मछली की शारीरिक संरचना बड़ी आकर्षक होती है। इसकी सभी जातियों में आकार और रंग–रूप की विविधता देखने को मिलती है, किन्तु सभी के पंख चमकीले और रंगबिरंगे होते हैं। समुद्री तितली मछली की सभी जातियों में रॉक ब्यूटी सर्वाधिक सुन्दर और आकर्षक होती है। इसका आगे का भाग काला एवं शरीर के पीछे का भाग पीला होता है। इसके मीनपंख चमकीले पीले रंग के होते हैं और इन पर लाल रंग के निशान होते हैं। यह बड़ी जिज्ञासु प्रवृत्ति की होती है। अतः प्रायः पानी के भीतर तैरती हुई अन्य जीवों के निकट पहुँच जाती है।

समुद्री तितली मछली की सुन्दर जातियों में शाही तितली मछली तथा नीली तितली मछली के नाम भी प्रमुख है। इनके शरीर के रंग अत्यन्त आकर्षक और चमकीले होते हैं। इन दोनों मछलियों का रंग गहरा नीला व बैंगनी होता है एवं शरीर पर काले–सफेद अर्धचन्द्राकार निशान होते हैं। ये निशान इनकी आँखों के पास तक चले आते हैं।

समुद्री तितली मछली की 150 से अधिक जातियों की खोज की जा चुकी है। इनमें नवीनतम है– बौनी तितली मछली। इसकी खोज सन् 1908 में हुई। सन् 1908 में बरमूडा के निकट के सागर में 162 मीटर की गहराई पर कुछ मछलियाँ पकड़ी गयी थीं, उनमें से एक बौनी तितली मछली भी थी।

फ्रांस के सागर तटों पर पायी जाने वाली फ्रांसीसी तितली मछली के शरीर की बनावट और रंग सभी बड़े विलक्षण होते हैं। इसकी त्वचा कठोर होती है व शरीर काले रंग का होता है एवं ऊपर की ओर पीले रंग का एक पट्टा होता है, जो दोनों मीनपंखों के नीचे तक चला जाता है। इसी तरह पीले रंग का एक पट्टा दोनों आँखों के मध्य से आरम्भ होता है और नीचे आकर थूथुन के पास चूड़ी के समान गोल आकार ग्रहण कर लेता है। इसकी आँखें काफी उभरी हुई होती हैं एवं सामने से देखने पर पूरा शरीर एक डरावने मुखौटे के समान मालूम पड़ता है। ❖

दीप जले

– गफूर 'स्नेही'

सोने की बाती, चाँदी सा उजाला,
दीपावली का पर्व है मतवाला।
बम फटे और चले पटाखे,
रोशनी से मूंद मूंद गई आँखें।।

मावस का धुला दाग काला,
दीपावली का पर्व मतवाला।
फसल आई घर शुभ यही लाभ,
हिसाब नये शुरू यही रंग आम।।

बधाई मिठाई का चला है दौर,
साफ स्वच्छता है हर ठौर।
नया कैलेण्डर ये बतलाता,
दीपावली का पर्व है मतवाला।।

दीपक

– दिनेश 'दर्पण'

ज्योति नई दिखाता दीपक,
सबका मन पुलकाता दीपक।

अंधियारे को दूर भगाकर,
नवप्रकाश फैलाता दीपक।

घर आँगन का कोना कोना,
जगमग–जग करवाता दीपक।

यदि भटक जायें राह तो,
झटपट राह दिखाता दीपक।

एक लक्ष्य के लिए न्यौछावर,
सब कुछ कर जल जाता दीपक।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

क्यों चिंटू, तुम क्यों नहीं चलोगे? अरे हाँ, तुम्हारे पास तो इतने पैसे नहीं होंगे ना, मेले में मजे करने के लिए के लिए।
हाँ! हाँ! हाँ! तुम मेरा मशाक उड़ा रही हो, किट्टी।
किट्टी, तुम्हें इस तरह किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।

देखो, देखो मेरा नया पर्स। इसमें बहुत सारे पैसे भी हैं। हम मेले में खूब मजे करेंगे।
किट्टी, तुम अपना पर्स संभाल कर रखना, मेले में बहुत भीड़ है।
मुझे अपना पर्स संभालना आता है। चलो, मैं तुम सबको पहले आइसक्रीम खिलाऊँगी।

भईया, इन सबको एक–एक आइसक्रीम दीजिए। अरे! मेरे पैसे कहाँ गए? किसी ने मेरा पर्स काटकर सारे पैसे निकाल लिए? अब क्या होगा।
हाँ! हाँ! मोंटू, तुमने ठीक ही कहा था, मुझे अपना पर्स संभाल कर रखना चाहिए था।
अब मुझे समझ में आ गया कि हमें किसी की गरीबी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। मैं कभी दोबारा ऐसा दोबारा नहीं करूँगी।,

भैया से पूछो

प्रश्न : वन्दनीय कौन?

उत्तर : माता–पिता। दोनों ही जीवन में पहले दिन से ही आपकी रक्षा, व्यवस्था, शिक्षा आदि पूरे मनोयोग से दिन–रात करते रहते हैं। आपके कल्याण के लिए निरन्तर चिन्तित रहते हैं। इसलिए प्रथम गुरु भी माता–पिता ही हैं।

प्रश्न : हम अपने व्यक्तित्व को कैसे निखार सकते हैं?

उत्तर : आत्म–विश्वास को दृढ़ कर, आत्म–चिंतन पर एकाग्र होकर सही दिशा में कदम बढ़ायें।

प्रश्न : सबसे महान दान कौन सा है?

उत्तर : क्षमादान।

प्रश्न : विशेष व श्रेष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर : कर्म, ज्ञान व भक्ति। इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वहीं कर्म विशेष व श्रेष्ठ है।

प्रश्न : क्या हम सबको खुश और सुखी रख सकते हैं?

उत्तर : हाँ; जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

प्रश्न : आदमी मजबूर क्यों हो जाता है?

उत्तर : अपनी क्षमताओं को ठीक से आँककर उन्हें क्रियात्मक न कर पाने के कारण।

प्रश्न : इन्सान का असली रूप क्या है?

उत्तर : निराकार।

प्रश्न : आँखें होते हुए भी इन्सान कब अंधा हो जाता है?

उत्तर : जब वह अन्धविश्वासी हो जाता है और बुद्धि तथा विवेक से काम लेना छोड़ देता है।

प्रश्न : संसार में सबसे उत्तम वस्तु क्या है?

उत्तर : सदाचार अर्थात् सद्चरित्र।

प्रश्न : चिन्ता और चिन्तन में क्या अन्तर है?

उत्तर : चिन्ता नकारात्मक सोच है और चिन्तन सकारात्मक विचार।

प्रश्न : अच्छाई किन चीजों से प्राप्त होती है?

उत्तर : सत्संगति, सद्व्यवहार और सदाचार से।

प्रश्न : सच्चे मनुष्य की क्या पहचान है?

उत्तर : उसके मन, कर्म और वचन में समानता होती है।

प्रश्न : लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या है?

उत्तर : लक्ष्य की स्पष्टता, एकाग्र मन से निरंतर उस ओर बढ़ना तथा उत्साह की तीव्रता।

प्रश्न : हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर : जैसा अपने साथ चाहते हैं।

प्रश्न : संसार में सबसे उत्तम वस्तु क्या है?

उत्तर : सदाचार अर्थात् सद्चरित्र।

प्रश्न : बच्चे भगवान का रूप क्यों कहे जाते हैं?

उत्तर : क्योंकि उनके मन शुद्ध व बनावट से परे होते हैं।

प्रश्न : कैसा जीवन जीने से अहंकार नहीं आता?

उत्तर : भक्ति भरा जीवन जीने से।

प्रश्न : किसी–किसी घर में सब ज्ञानवान और शिक्षित होते हुए भी आपसी तालमेल एक जैसा क्यों नहीं होता?

उत्तर : ज्ञान को व्यवहार में न ला पाने के कारण ऐसा होता है।

प्रश्न : 'विद्या ददाति विनयम्' कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : सौ प्रतिशत। हाँ अधूरी विद्या अहंकार को जन्म देती है। अहंकार विनयशीलता के विपरीत भाव है।

प्रश्न : इन्सान को गुस्सा क्यों आता है?

उत्तर : अपनी सामर्थ्य की कमजोरी को न पहचान पाने के कारण।

प्रश्न : भाग्य पर किस सीमा तक भरोसा किया जाना चाहिए?

उत्तर : अपने कर्म करने की क्षमता की हद तक क्योंकि भाग्य अपने निष्काम कर्मों का भाग्य–फल ही तो है।

प्रश्न : अनजाने में यदि कोई गलती हो जाए तो उसे कैसे दूर किया जाए?

उत्तर : पूरी तरह जागरूक रहकर गलती स्वीकार करें व उसे न दोहराने की शपथ लें। गलती के प्रभाव को तो हँसकर झेलना ही होगा।

प्रश्न : अपने से अधिक आयु, व्यवहारकुशल तथा अपने विश्वास को दृढ़ करने के लिए क्या करें?

उत्तर : अपना आत्मविश्वास कम नहीं होने देना चाहिए।

प्रश्न : क्या कर्म द्वारा भाग्य बदलता है?

उत्तर : कर्मों का फल ही तो भाग्य कहलाता है।

प्रश्न : मन में परोपकार की भावना कैसे जन्म लेती है?

उत्तर : अच्छी संगति से।

प्रश्न : सबसे बड़ा पुण्य क्या है?

उत्तर : परहित।

प्रश्न : इन्सान महान कैसे बनता है?

उत्तर : महापुरुषों व सन्तों की संगति करने से।

प्रश्न : इन्सान की इज्जत किस चीज से बढ़ती है?

उत्तर : सद्चरित्र से।

प्रश्न : सत्पुरुषों और गुरुओं से हमें क्या सीखना चाहिए?

उत्तर : जीने का सही ढंग।

प्रश्न : आदमी कब महान बनता है?

उत्तर : जब अपना ध्यान व कर्म केवल निःस्वार्थ भाव से मानव–कल्याण की ओर लगा देता है।

प्रश्न : सबसे अच्छा उपदेश क्या है?

उत्तर : जिससे आत्म–दर्शन हो।

प्रश्न : ऐसी कौनसी चीज है (ईश्वर को छोड़कर) जो कभी भी मरती या खत्म नहीं होती?

उत्तर : मानवता।

प्रश्न : सच्चे मनुष्य की पहचान क्या है?

उत्तर : उसके मन, कर्म और वचन में समानता होती है।

प्रश्न : इन्सान के लिए सबसे अच्छा समय कौनसा है?

उत्तर : सफलता प्राप्ति का अवसर।

प्रश्न : क्या खाली वक्त का सदुपयोग किया जा सकता है?

उत्तर : क्यों नहीं। मन में संकल्प लें। सजग रहकर अपनी क्षमता का आंकलन करें और समय नष्ट किये बिना जुट जाएँ कार्य में।

प्रश्न : इन्सान को बुरा कौन बनाता है?

उत्तर : उसके कर्म।

प्रश्न : इन्सान को सब जीवों से श्रेष्ठ क्यों माना जाता है?

उत्तर : क्योंकि यह परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अनोखी दिवाली

– ललित शौर्य

कोको बिल्ली को पटाखे छुड़ाने का बहुत शौक था। उसे हर साल दीवाली का बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता था। वह दीवाली मनाने के लिए साल भर रुपये जमा करती। फिर दीवाली के दिन झोला भरकर पटाखे खरीद लाती।

''इस साल दीवाली में क्या प्रोग्राम है?'' रैटी चूहे ने कोको से पूछते हुए कहा।

''मैं तो इस बार भी हर साल की तरह खूब पटाखे खरीदकर लाऊँगी।'' कोको ने उचकते हुए जवाब दिया।

''ओह, इसका मतलब इस साल भी देर रात तक आतिशबाजी का करने का मूड है।'' रैटी ने कहा।

''हाँ, जरूर। देर रात तक। खूब पटाखे और आतिशबाजी की जाएगी।'' कोको बोली।

''मुझे लगता है, ज्यादा आतिशबाजी ठीक नहीं। तुमने सुना नहीं स्कूल में 'एन्वायरन्मेंट की क्लास' में मैम ने क्या कहा। इससे हमारे पर्यावरण को

बहुत नुकसान होता है। हवा प्रदूषित हो जाती है।'' रैटी ने कुछ समझाने के अंदाज में कहा।

''मुझे तो बस पटाखे छुड़ाने हैं। इसी में आनंद आता है।'' कोको ने कहा और वह वहाँ से चली गई।

दीवाली का दिन नजदीक था। सभी खरीददारी करने में व्यस्त थे। कोको भी अपने पटाखों की लिस्ट बना रही थी। उसने अपना गुल्लक तोड़कर रुपये निकाल लिए थे। इस बार उसके गुल्लक से पच्चीस सौ रुपये निकले थे। वह पूरे रुपये पटाखों एवं रंगीन रोशनी वाली आतिशबाजी में खर्च करने वाली थी।

उधर दूसरी ओर रैटी और उसके साथी दीवाली पर कुछ विशेष तैयारियों में जुटे थे।

''हम इस बार दीवाली को खुशियों वाली दीवाली बनाना चाहते हैं। जिससे हमारे साथ–साथ औरों को भी खुशी मिले।'' रैटी ने अपने साथियों से कहा।

''लेकिन ये कैसे हो सकता है। हमें क्या करना होगा?'' फैटी चूहा बोला।

''ऐसा तभी होगा जब हम दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने का काम करेंगे।'' रैटी ने कहा।

''वही तो मैं पूछना चाहता हूँ। ये कैसे होगा?'' फैटी बोला।

''हम सभी रुपये जमा कर उन बच्चों को फुलझड़ियाँ, मिठाईयाँ और कपड़े बाटेंगे जो इन्हें खरीद नहीं पाते। हमारी कालोनी के पास वाली बस्ती में बहुत सारे ऐसे जानवर रहते हैं जो बहुत गरीब हैं। हमें उनके साथ मिलकर दीवाली मनानी चाहिए। जिससे उनको अच्छा लगेगा। हमें भी खुशी मिलेगी।'' रैटी ने अपनी योजना बताते हुए कहा।

''ये तो बहुत ही अच्छी बात है। हमें जरूर ऐसा करना चाहिए। मेरी मम्मी भी कहती है,

हमें हमेशा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहना चाहिए।'' मोंटी चूहा बोला।

''हाँ, हम इस बार अनोखी दीवाली मनाएँगे। सबके चेहरे पर मुस्कान लाएँगे।'' सभी ने एक स्वर में कहा।

इसके बाद सभी ने योजना बनाई कि कल इसी जगह मिलेंगे। साथ ही सभी रुपये लेकर भी आएँगे।

कोको भी अपनी योजना बनाकर तैयार थी। उसे भी बहुत सारी आतिशबाजी लेनी थी। लेकिन वह पहले रैटी और उसके साथियों के बारे में जानना चाहती थी, आखिर वे कैसे दीवाली मनाने वाले हैं?

अगले दिन वह उनकी योजना जानने के लिए उनकी मीटिंग वाली जगह पहुँच गई। वह उन सबकी बात सुनने लगी।

''हम सभी आज ही मिठाई, कपड़े और फुलझड़ियाँ खरीद लेंगे। ताकि जरूरतमंदों को बाँट सकें।'' रैटी ने कहा।

''हाँ, ठीक है।'' फैटी ने सभी से रुपये जमा करते हुए कहा।

कोको समझ नहीं पा रही थी आखिर कपड़े, मिठाई और फुलझड़ियाँ किसके लिए खरीदी जा रही हैं। वह यह सब जानने के लिए उत्सुक थी। वह सीधे रैटी के पास पहुँचकर उससे बात करने लगी।

''क्या बात है? किसके लिए सामान लेने की बात चल रही है? क्या तुम लोग आतिशबाजी का मजा नहीं लोगे? पटाखे खरीदने बाजार नहीं जा रहे हो?'' कोको ने पूछा।

''नहीं, हम लोग पटाखे नहीं खरीद रहे।'' रैटी बोला।

''पटाखे नहीं खरीदोगे तो क्या करोगे? दीवाली कैसे मनाओगे?'' कोको ने प्रश्न किया।

''हम लोग इस बार स्पेशल दीवाली मना रहे

हैं। हम हमारी कालोनी के पास वाली बस्ती में रहने वाले गरीब जानवरों के लिए दीये, मिठाई, कपड़े और फुलझड़ियाँ खरीद रहे हैं। ताकि वे सब भी दीवाली मना सकें।'' रैटी ने बताया।

कोको ये सुनकर कुछ न बोली। वह मन ही मन सोचने लगी, ''रैटी और उसके साथी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। आतिशबाजी में पैसा बर्बाद करने से तो गरीब जानवरों की मदद करना अच्छा काम है। मुझे भी उनका साथ देना चाहिए।''

''मैं भी तुम लोगों के साथ हूँ। मैं भी रुपये जमा करूँगी। इस बार की दीवाली बस्ती के गरीब जानवरों के नाम।'' कोको ने मुस्कुराते हुए कहा।

कोको की बात सुनकर रैटी और उसके दा. `स्त खुशी से झूमने लगे। उन्हें कोको की पहल अच्छी लगी। उन्होंने उसे भी अपनी योजना में शामिल कर लिया।

दीवाली वाले दिन वे सभी कालोनी के मैदान में मिले। उन्होंने बाजार जाकर खरीददारी की। खूब सारा सामान लेकर, दूसरी बस्ती की ओर चल दिये। वहाँ गरीब जानवरों को कपड़े, मिठाई, फुलझड़ियाँ और दीये बाँटे। ऐसा करने से कोको को बहुत आनंद आया। उसके मन में खुशी के पटाखे फूटने लगे। सभी ने वहाँ पर दीये जलाए। इस तरह अनोखी दीवाली मनाई गई। ❖

गुणों से भरपूर शहद

– राजकुमार जैन

मधु या शहद संसार में सर्वत्र परिचित वस्तु है। संसार की समस्त मानव जाति ने मधु को अपने जीवन का अंग माना है। चीनी, मिस्री, बेवीलोनी, हिब्रू, ग्रीक, हिन्दू, ईसाई व बौद्ध आदि मधु को पवित्रतम पदार्थ के रूप में मानते हैं।

मधुमक्खियां फूलों में से एक प्रकार का मीठा रस एकत्रित करती हैं। इसी रस को मकरंद कहते हैं। मधुमक्खियाँ जीभ से मकरंद उठाती हैं और अपने मधु–आमाशय में इकट्‌ठा करती हैं। इसके बाद अपने छत्ते में बैठी अन्य मधुमक्खियों को सौंप देती हैं और तुरन्त ही और मकरंद लाने चली जाती हैं। छत्ते की मधुमक्खियाँ मकरंद को छोटी–छोटी कोठरियों में रखने में व्यस्त रहती हैं। उनकी विशिष्ट ग्रंथियों से निकलने वाला द्रव्य मकरंद में मिलता रहता है। वे छत्ते में घुसकर एक–एक बूंद रस लेकर अपने मुँह में रखती हैं और उसे अपने मधु–आमाशय में ले जाती हैं, फिर बाहर निकालती हैं और इसी प्रक्रिया को कई बार दोहराती हैं। इस तरह उनका कार्य जारी रहता है और वे अति परिश्रम से पुष्प रस का संचय करती हैं।

अमेरिका के वैज्ञानिक डॉ. ए. वी. स्टुअर्टवेंट ने शहद के गुणों और रोग–निवारक क्षमताओं पर लम्बे समय तक अनुसंधान किया। उनका निष्कर्ष है कि शहद अद्‌भुत टॉनिक है और अपने में जबरदस्त रोग–निवारक गुण समाहित किए हुए है। डॉ. स्टुअर्टवेंट के अनुसार पुराने श्वास–रोग और पेचिश में पाए जाने वाले रोगाणु शहद में रखने से 48 घंटों में मर गये। जब उन्होंने शहद में टाइफाइड के रोगाणु रखे तो 120 घंटे में वह नष्ट हो गये। इसकी वजह शहद की वह क्षमता है जिस वजह से शहद आसपास के परिवेश से नमी शोषित कर लेता है।

मधु में 17 प्रतिशत से 23 प्रतिशत तक जल, अंगूरों की शर्करा और फलों की शर्करा 65 प्रतिशत तक होती है। शेष प्रतिशत में धातुएँ–पोटेशियम, गंधक, कैलशियम, सोडियम, फॉस्फोरस, मैगनीशियम, सिलीका, लोहा, ताँबा, मैगनीज तथा अम्ल पदार्थ जैसे ग्लूकोनिक एसिड, लैकटिक एसिड और मौलिक एसिड इत्यादि होते हैं। इसके अतिरिक्त और तकरीबन एक प्रतिशत एनजाइम्स और विटामिन भी होते हैं।

बालों व त्वचा के सौन्दर्य व पुष्टता के लिए तो मधु अत्यधिक उपयोगी है ही, चर्म रोगों के लिए भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। चर्म–रोग और फोड़े–फुँसी चाहे कितने ही फैले और गम्भीर अवस्था में हो, मधु का लेप करने से शीघ्र ही सूखने लगेंगे। मवाद भी आसानी से निकल जाएगा।

थकान के वक्त यदि शहद का उपयोग किया जाए तो तत्काल राहत मिलेगी व ताजगी तथा स्फूर्ति महसूस होगी। शहद से प्राप्त शक्ति काफी समय तक शरीर में मौजूद रहती है। शहद में अद्‌भुत गुण यह है कि यह कभी खराब नहीं होता। हरदम उपयोगी बना रहता है। शहद में सड़ांध पैदा नहीं होती व यह शरीर में होने वाली सड़ांध को रोकता है। 1923 ई. में मिस्र में फराओ तूतन खामन के पिरामिड में रूसी वैज्ञानिकों को शहद से भरा

हुआ पात्र मिला। सचमुच यह हैरत में डाल देने वाली बात थी कि 3300 वर्ष पुराना होने के बावजूद यह खराब नहीं हुआ था। उसके स्वाद व गुण में कोई अन्तर नहीं आया था।

आइए, अब शहद के कुछ उपयोगों के बारे में जानकारी देते हैं–

- ❖ शहद की मक्खी के काटे हुए स्थान पर शुद्ध शहद लगाएँ इससे जलन कम होगी व सूजन भी नहीं आएगी।
- ❖ पेट में दर्द होने पर एक बड़ी इलायची को पीसकर एक चम्मच शहद में मिलाकर पीने से दर्द मिट जाता है।
- ❖ गर्म पानी में शहद मिलाकर दिन में तीन–चार बार सेवन करने से जुकाम ठीक हो जाता है।
- ❖ हिचकी यदि लगातार आ रही है, तो शहद चाटिए।
- ❖ शरीर के किसी हिस्से के जल जाने पर वहाँ शहद लगाने से आराम मिलेगा।
- ❖ आपको कब्ज की शिकायत है तो सप्ताहभर तक एक गिलास पानी में नींबू का रस और शहद मिलाकर दिन में दो बार सेवन करें। कब्ज मिट जाएगा।
- ❖ सामान्य नेत्र विकार तथा नेत्रों की वेदना, नेत्रों में शहद डालने से ठीक हो जाती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।
- ❖ छाती पर जमा हुआ कफ एक तौला शहद दिन में तीन से चार बार लेने से गलकर बाहर आ जाता है। ❖

पढ़ो और हँसो

शिक्षक : (मोंटू के पिताजी से) आपका लड़का क्लास में सबसे कमजोर है।

मोंटू के पिता : साहब! भगवान की दया से घर में दो–दो भैंस हैं, दूध–घी की घर में कोई कमी नहीं है। फिर भी न जाने ये क्यों कमजोर है?

एक ड्राइवर को तेज रफ्तार से बस चलाते देख ट्रैफिक पुलिसमैन ने रोका और डायरी निकालकर ड्राइवर से पूछा– आपका नाम?

ड्राइवर : मेरा नाम है– कपालामात चंद्रा तसकल कातरजीमयू नाकु दा...

पुलिसमैन ने बीच में ही टोकते हुए कहा– बस–बस आगे जाओ, आइंदा इतनी तेज गाड़ी मत चलाना।

एक मकान मालकिन का कुत्ता मर गया। मालकिन बहुत जोर–जोर से रो रही थी। बगल में बैठी नौकरानी भी मालकिन से ज्यादा जोर से विलाप कर रही थी। मालकिन ने चुप होकर नौकरानी से पूछा– कुत्ता मेरा मरा है, लेकिन तुम तो मुझसे भी अधिक रो रही हो, ऐसा क्यों?

–क्योंकि अब सारे बर्तन मुझे अकेले ही साफ करने पड़ेंगे– नौकरानी ने जवाब दिया।

–सुदीप (दिल्ली)

एक आदमी रेल डिब्बे में एक संदूक को ऊपर वाले बर्थ पर रखने लगा तो नीचे बैठी महिला बोली– इसको किसी और जगह रखो। कहीं यह मेरे सिर पर न आ गिरे।

वह आदमी बोला– चिन्ता की कोई बात नहीं। इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं है।

एक उम्मीदवार ने परिचित वोटर के घर जाकर कहा– भैया जरा ख्याल रखना, मैं खड़ा हूँ।

वोटर ने एक खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा– आप खड़े क्यों हैं, बैठिये न।

माँ : (विजय से) तुम कमर में रस्सी बाँधकर क्यों पढ़ रहे हो?

विजय : मास्टर जी ने कहा है कि परीक्षाएँ नजदीक आ रहीं हैं इसलिए तुम कमर कसकर पढ़ाई करो।

टी.वी. चैनल के रिपोर्टर ने एक जख्मी से पूछा– जब बम गिरा, तो क्या वह फट गया था।

जख्मी व्यक्ति ने कराहते हुए गुस्से से कहा– नहीं, वह रेंगकर मेरे पास आया और प्यार से बोला– धप्पा!

– आशीष खुराना (सादुलशहर)

एक व्यक्ति अपने बेटे के साथ अपने वकील दोस्त से मिलने गया।

वकील साहब की किताबों से भरी अलमारी देखकर लड़का बोला– अंकल आप तो मेरे डैडी से भी दो हाथ आगे निकल गये। लगता है आप भी इनकी तरह लाइब्रेरी से किताबें लाकर वापस नहीं करते, इतना स्टॉक जमा कर लिए।

सेठ : (नौकर से) अरे रामू इधर आ, मैं तुझे नौकरी से बाहर निकालता हूँ।

नौकर : (सेठ से) मैंने तो कुछ किया ही नहीं फिर आप मुझे नौकरी से क्यों निकाल रहे हो?

सेठ : तुम कुछ नहीं करते इसलिए तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल रहा हूँ।

बाजीगर : देखिये साहेबान मैं मीनार से छलांग लगाऊँगा और नीचे नहीं आऊँगा।

दर्शक : यह तो नई बात नहीं हुई। मीनार से छलांग लगाने वाला हर आदमी ऊपर जाता है।

अध्यापक : (छात्रों से) बच्चो! अगर तुम अपनी आँख बन्द कर लोगे तो तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देगा।

छात्र : सर! अंधेरा दिखाई दे रहा है।

— सुभाष पांचाल (बेगमाबाद)

सोहन : (मोहन से) यार, मुझे कल तक सौ रुपये उधार दे दो।

मोहन : नहीं, मैं रुपये उधार नहीं देता हूँ।

सोहन : तो फिर नगद ही दे दो।

एक आदमी अपने साथी से बोला– मैंने अपने पहले लड़के का नाम 'अंतरंजन' रखा है और दूसरे का नाम 'संतरंजन' रखा है। अब तीसरे का क्या रखें?

–तुम तीसरे का नाम 'दंतमंजन' रख दो।
– उसके साथी ने सलाह दी।

पत्नी : अजी, क्या यह सच है कि रुपये–पैसे भी बोलते हैं?

पति : हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।

पत्नी : तो फिर आप दफ्तर जाने से पहले मुझे कुछ पैसे दे जाना, मैं घर में अकेली बैठी बोर होती रहती हूँ।

सोहन : डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को नाखून चबाने की बुरी आदत है क्या करूँ?

डॉक्टर : इसमें चिन्ता की क्या बात है। अपनी पत्नी को दाँतों के डॉक्टर के पास ले जाइए और सारे दाँत उखड़वा दीजिए।

— प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

कभी न भूलो

संकलनकर्ता : महन्थ राजपाल

- जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारा सच्चा मित्र है।

  — चाणक्य

- भगवान का आश्रय लेने वाले को दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।

  — स्वामी रामसुख दास

- बच्चों के लिए उस कर्ज को चुकाना मुश्किल है जो उनके माता–पिता ने उन्हें बड़ा करने के लिए किया है।

  — रामायण

- ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते।

  — रविन्द्रनाथ टैगोर

- मुसीबतों को हौंसले से झेलो, इनसे घबराना अपने काम को बिगाड़ना है। मुसीबत में ही आदमी का इम्तिहान होता है।

  — लाला लाजपतराय

- मूर्ख को मूर्खता के अनुरूप उत्तर न दो, नहीं तो तुम भी उसी के अनुरूप हो जाओगे।

  — तुलसीदास

- जिस प्रकार जल में पड़ा होने पर भी पत्थर नरम नहीं होता उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति की अवस्था होती है ज्ञान दिए जाने पर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

  — रहीमदास

- सत्य केवल ईश्वर ही है। परलोक में सत्य से जिस प्रकार जीवन का उद्धार होता है। उस तरह यज्ञ, दान और नियमों से नहीं। एकमात्र सत्य ही अविनाशी ब्रह्म है।

  — महाभारत

- अभिप्राय में उदारता, कार्य सम्पादन में मानवता, सफलता में संयम इन्हीं तीन चीजों से महान व्यक्ति जाना जाता है।

  — विस्मार्क

- सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाय सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए।

  — अल्बर्ट आइंस्टीन

- किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गंवाओ। उसके गुणों को अपनाने की प्रयास करो।

  — कार्ल मार्क्स

- तुम हँसते हुए देखोगे कि सारा संसार तुम्हारे साथ हँसता है, लेकिन रोते समय तुम स्वयं को अकेला पाओगे।

  — विलकॉक्स

- लोग क्या सोचेंगे इस बात की चिन्ता करने की बजाय क्यों न कुछ ऐसा करने में समय लगाएँ जिसे प्राप्त करने पर लोग आपकी प्रशंसा करें।

  — डेल कार्नेगी

सच की जीत सदा है होती

– राजेन्द्र निशेश

अंधकार से लोहा लेने,
पंक्ति पंक्ति दीप जले हैं।

सच की जीत सदा है होती,
ऐसा सब ज्ञानी हैं कहते।
चाहे कितनी कठिन परीक्षा,
वीर बुराई कभी न सहते।

अच्छाई का स्वागत करने,
पूजा के ले थाल चले हैं।।

मिलकर सारे बाँट रहे हैं,
प्यार भरी यह सुन्दर घड़ियाँ।
हर आँगन में दमक रही हैं,
सात रंग की सुन्दर लड़ियाँ।

रूठों को भी गले लगाने,
हर हृदय के द्वार खुले हैं।।

झिलमिल करती फुलझड़ी है,
नाच रही फिरकी मतवाली।
हवाई अपना रंग दिखाती,
अनार बजा रहे हैं ताली।

आज उमंगों का मेला है,
भावों के लो सुमन खिले हैं।।

दीप तुम्हारा प्यार

– चन्द्रभान

एक दीप तुम प्यार का, रखना दिल के द्वार।
यही दीप का अर्थ है, यही पर्व का सार।

दीप हृदय में कर गये, खुशियों की बौछार।
आज प्रेम से हम करें, दीपों का सत्कार।

केसर, चन्दन घर लगे, रोली अक्षत द्वार।
सजी दीप की अल्पना, किरणें वंदनवार।

फूल–पंखुड़ी तन हुआ, हृदय हुआ अब दूब।
दीप–पर्व के ताल में, हम सब जाएँ डूब।

दीप–पर्व सी जिन्दगी, दीप तुम्हारा प्यार।
तुम रंगोली अल्पना, तुम ही वंदनवार।

दीया इक विश्वास का, जले हृदय में आज।
सद्भाव को नोच रहे, आज घृणा के बाज।

उड़ी गगन में प्रेम की, किरणें पंख पसार।
हुआ पराजित दीप से, फिर तिमिर एक बार।

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया परिवार के सभी सदस्यों को वार्षिक सन्त–समागम की हार्दिक शुभकामनाएँ।

दातार की कृपा से बच्चों के चारित्रिक, बौद्धिक एवं वैचारिक गुणों में वृद्धि के लिए यह पत्रिका अतुलनीय योगदान दे रही है।

सन्त–समागम के शुभ अवसर पर अपने जान–पहचान वाले बच्चों तक हँसती दुनिया पहुँचाकर एक अमूल्य योगदान हम सभी दे पायें। ऐसी सत्गुरु के चरणों में अरदास करते हैं।

– रानी–जवाहर (निरंकारी कालोनी)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

'सबसे पहले' तथा 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के शब्द की जो व्याख्या दी गई है वह हमें सत्गुरु के वचनों पर चलने में मदद करती है।

वैसे तो सभी स्तम्भ अच्छे होते हैं परन्तु विशेषतौर पर 'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो' ज्ञानवर्द्धक होते हैं तथा 'पढ़ो और हँसो' भी हमें पसन्द हैं।

– समदीक्षा (इन्द्रलोक, दिल्ली)

हँसती दुनिया है बहुत न्यारी,
हम सबको लगती है प्यारी।

सभी इसे खुशी से पढ़ते,
इसका बेसब्री से इन्तजार करते।

हमको सभी से प्यार करना सिखाती,
नफरत, वैर, ईर्ष्या को दूर भगाती।

पढ़कर जीवन सफल हो जाए,
हम न कभी इसे भूल जाए।

सभी की यही कामना है,
ऊँचाइयों को छूएं यही प्रार्थना है।

– निशा चौधरी (रिठाना कैम्प, जम्मू)

प्यारी हँसती दुनिया

हँसती दुनिया प्यारी पुस्तक है,
देती दिल पे दस्तक है।

हर अक्षर ज्ञान भरा है,
अज्ञान का तिमिर हरा है।

ऊँचा करती मस्तक है,
हँसती दुनिया प्यारी पुस्तक है।

जीवन का निर्माण करें,
जन–जन का कल्याण करें।

सबकी प्यारी अब तक है,
हँसती दुनिया प्यारी पुस्तक है।

चित्र सुन्दर इसमें आते,
बालमन को ये लुभाते।

ये भरती ज्ञान अक्षत है,
हँसती दुनिया प्यारी पुस्तक है।

– सुदीप (निरंकारी कालोनी)

सितम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. मिशिका शर्मा — 11 वर्ष
म.नं. 551/ए, न्यू शास्त्री नगर,
प्रिंस आटा चक्की के पास,
पठानकोट–145001 (पंजाब)

2. तन्नू — 14 वर्ष
फेस–2, कोटला विहार,
नजफगढ़ रोड, नांगलोई,
नई दिल्ली–110043

3. सुदीक्षा — 13 वर्ष
गुरदयाल विहार, चंचल पार्क,
नई दिल्ली–110041

4. सिद्धांत माथुर — 12 वर्ष
डी–34, गली नं. 9, शिवराम पार्क,
नई दिल्ली–110041

5. प्रतिभा — 12 वर्ष
ए–66, शिवराम पार्क,
नई दिल्ली–110041

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

रिद्धि सैनी (पालम कालोनी, नई दिल्ली), विधिता भारद्वाज (सेक्टर–18ए, द्वारका), राहुल कुमार (जौनपुर) पुलकित चौधरी (सेक्टर–26, रोहिणी), इशाना ठकराल (गीता कालोनी, दिल्ली), समीपता जगोत्रा (अमृतसर), प्रमेश, प्रीत किरण, प्रीति, सन्नी, पलक, रितिका, आशुतोष, सिमरन (शिवराम पार्क, नई दिल्ली) खुशी, रिया, प्रीति कुमारी, कृतिका गुप्ता, मानवी राज, आशीष कुमार (मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण), रौनक, प्रेम मिठानी, यश, आरूही भोजवानी, लहर, नैतिक, चाँदनी मूलचंदानी, भविका, देव, हनी रामचंदानी, धैर्य, नमन मोटवानी, परी, आयुषी असनानी, जिगर राजाई, परी समियानी, दक्ष पंजाली, मुस्कान लालवानी, हार्दिक इसरानी, प्रानती जोशी, हीर, प्रियंका, कृष्णा (गोधरा)।

नवम्बर अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 नवम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जनवरी 2024 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
IT'S LIVE,
DOWNLOAD NOW
SNM
App Store
Google Play
News Divine
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
सुनो तराने
नए पुराने
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
महफ़िल ए रूहानियत
Mehfil-E-Ruhaniyat
Special programme
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
: License No. U (DN) -23/2021-2023
: Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : 9818883394